ज्ञान विचार

एक कामयाब इंसान की नींव उसके अच्छे विचार होते है।

PKL NO.KKR/184/2022-24

हिन्दी पाक्षिक राष्ट्रीय समाचार पत्र

सच्ची व स्टीक खबर , आप तक

गजब हरियाणा

सम्पादक : जरनैल सिंह

छायाकार : राजरानी

Contact : 91382-03233

समस्त भारत में एक साथ प्रसारित

HAR/HIN/2018/77311

WWW.GAJABHARYANA.COM ✸ 01 मई 2023 वर्ष : 6, अंक : 03 पृष्ट : 8 मूल्य: 7/- सालाना 150/- रुपये ✸ email. gajabharyananews@gmail.com

प्रेरणास्त्रोत: डॉ. कृपा राम पुनिया IAS(Retd.), पूर्व उद्योग मंत्री हरियाणा सरकार

मार्गदर्शक: डॉ. राज रूप फुलिया, IAS (Retd), पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार तथा वाइस चांसलर, गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार एवं चौधरी देवीलाल यूनिवर्सिटी, सिरसा

गीता में दिया गया विश्व शांति, प्रेम और भाईचारा का संदेश हर मानव के लिए वर्तमान समय की जरूरत: मनोहर लाल

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल के श्रीमद्भगवद्गीता के सार्वभौमिक ज्ञान को दुनिया के कोने-कोने में पहुंचाने के लिए किए जा रहे समर्पित प्रयासों के फलस्वरूप इस बारऑस्ट्रेलिया में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव मनाया जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया के कैनबरा के फेडरल पार्लियामेंट में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के उद्घाटन (ओपनिंग सेरेमनी) अवसर पर आज वर्चुअली संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज के समय में जब पूरा संसार युद्ध, आतंकवाद, हिंसा व तनाव का सामना कर रहा है, इस समय गीता में दिया गया विश्व शांति, प्रेम और भाईचारा का संदेश हर मानव के लिए वर्तमान समय की जरूरत है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सभी भारतीयों विशेषकर हरियाणावासियों के लिए यह गर्व की बात है कि ऑस्ट्रेलिया की स्वयंसेवी संस्थाओं और कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के संयुक्त प्रयासों से ऑस्ट्रेलिया की पावन धरा पर अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन किया गया है। इस आयोजन में सहयोग करने वाली सभी संस्थाओं का हार्दिक धन्यवाद। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि गीता एक ऐसा अलौकिक प्रकाश पुंज है, जो काल, देश और सीमाओं से परे है, जो सर्वकालिक, सार्वभौमिक और चिरस्थायी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि श्रीमद्भगवद्गीता जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए सार्थक है। उनके मार्गदर्शन से हरियाणा सरकार गीता के इस ज्ञान को दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए प्रयास कर रही है। हरियाणा के गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ऑस्ट्रेलिया में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में हिस्सा लेने के लिए गया है। प्रतिनिधिमंडल में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज, पानीपत से विधायक महिपाल ढांडा शामिल हैं।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं महान भारत के उस छोटे से प्रदेश हरियाणा का मुख्यमंत्री हूं जहां कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर भगवान श्रीकृष्ण ने 5160 वर्ष पहले गीता के माध्यम से कर्म योग का अमर संदेश दिया था, जो सदियों तक मानव का मार्गदर्शन करता रहेगा। गीता में कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र की संज्ञा दी गई है। सर्व धर्म सद्भाव की यह पावन धरा देश विदेश के लोगों का तीर्थ स्थल है। उन्होंने इस आयोजन के लिए बधाई देते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में ऑस्ट्रेलिया के लोगों ने गीता के प्रति जो आस्था एवं श्रद्धा और उत्साह दिखाया है, उनका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। उन्होंने गीता की पावन भूमि कुरूक्षेत्र आने का भी निमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि गीता मनुष्यों को अपना कर्तव्य सही ढंग से निभाने, न्यायपूर्ण कर्म करने और सामाजिक व्यवस्थाओं की पालना करने के लिए प्रेरित करती है। गीता में कर्तव्य पालन और कर्म करने पर ज़ोर दिया गया है, इसलिए गीता को कर्मयोग का शास्त्र भी कहा जाता है।

उन्होंने कहा कि गीता के श्लोक में कहा गया कि कर्म करो और फल की चिंता मत करो। उन्होंने कहा कि गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने यह भी संदेश दिया है कि मनुष्य को अहंकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि सब कुछ उस परमात्मा में निहीत है। गीता का यह संदेश यदि विश्व के सभी लोग समझ लें तो फिर सभी प्रकार की समस्याएं खत्म हो जाएंगी और सारा संसार एक परिवार हो जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि 21वीं सदी की सभी समस्याओं का हल श्रीमद्भगवद्गीता में निहित है।

भगवान श्रीकृष्ण की अमरवाणी में गीता में श्रेष्ठ समाज बनाने के उपाय दिये हुए हैं। इसके पाठ और प्रयोग में हम ऐसा समाज बना सकते हैं, जहां प्रत्येक व्यक्ति आनंदित एवं सुखी हो सकता है। इसके पाठ एवं आचरण से एक साधारण आदमी उत्कृष्ट व्यक्ति बन सकता है।

जर्नलिस्ट जरनैल सिंह रंगा का डॉ अंबेडकर राष्ट्रीय अवार्ड – 2023 के लिए हुआ चयन

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र। गजब हरियाणा सामाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा को 24 अप्रैल को भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ। जिसमे 10 दिसंबर को दिल्ली में भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित 36वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा को ' डॉ अंबेडकर राष्ट्रीय अवार्ड – 2023' सम्मान के लिए चयन किया। उनको यह सम्मान दलित पत्रकारिता की अभिवृद्धि, वंचितों, दलित , गरीब, मजलूमों, असहायों की आवाज उठाने के लिए दिया जाएगा। भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा 14 अप्रैल को बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी की 132 वीं जयंती पर घोषणा की। जिसमे डॉ अंबेडकर इंटरनेशनल अवॉर्ड – 2023 नेपाल के दलित नेता रनेंद्र बराली को दिया जाएगा। दलित समाज की अस्मिता व गौरव की अभिवृद्धि के लिए डॉ अंबेडकर राष्ट्रीय सम्मान –2023 अंतर्राष्ट्रीय बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता थाईलैंड में गोल्ड मेडल विजेता श्रीमती प्रिया सिंह मेघवाल को दिया जाएगा।

इस साहित्यकार सम्मेलन में देश विदेश से हजारों की संख्या में पत्रकार, लेखक, कवि, साहित्यकार, कलाकार, समाजसेवी, बिज़नेसमैन, समाज चिंतक, नेतागण भाग लेंगे।

उत्कृष्ट व सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों की शैली से प्रभावित होते हैं अन्य अधिकारी व कर्मचारी : डीसी जगदीश शर्मा

30 अप्रैल को सेवानिवृत होने वाले डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह के सम्मान में रखी गई फेयरवेल पार्टी

गजब हरियाणा न्यूज

कैथल, डीसी जगदीश शर्मा ने कहा कि सरकारी सेवा में अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद अधिकारी व कर्मचारी सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का कार्य करता है। अपने सरकारी सेवाकाल में उत्कृष्ट व सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारी अपनी शैली से अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रभावित करते हैं। डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह ने 32 साल सरकारी सेवा में कार्य किया है और अब सेवा निवृत के बाद सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियां भी उन्हें निभानी है, जिसके लिए उनके अच्छा स्वास्थ्य और आगे के जीवन को सुखमय होने की शुभकामनाएं देते हैं। समाज और देश के लिए कुछ नया करते रहना नितांत जरूरी है, इसलिए हमें अतीत और वर्तमान से सीख लेकर भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए काम करना चाहिए।

डीसी जगदीश शर्मा शुक्रवार को लघु सचिवालय के सभागार में 30 अप्रैल को सेवानिवृत होने वाले डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह के सम्मान में रखी गई फेयरवेल पार्टी में बोल रहे थे। इस मौके पर एडीसी डॉ. बलप्रीत सिंह, एसडीएम संजय कुमार, सीटीएम गुलजार मलिक, एआईपीआरओ कृष्ण कुमार, नवीन मल्होत्रा, डीआई रामफल शर्मा, महेंद्र खन्ना, बलबीर शर्मा के साथ-साथ उनके परिवार से बेटी वीरता तथा भतीजे कुलदीप ने भी फेयरवेल पार्टी में शिरकत करते हुए डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह को शुभकामनाएं दी। डीसी जगदीश शर्मा ने कहा कि सरकारी सेवा में आने वाले व्यक्ति की सेवानिवृति की तारीख पहले से ही तय होती है और अच्छे अधिकारी अपने सेवा काल में ईमानदारी व निष्ठा से अपनी डयूटी का निर्वहन करते हैं। उन्होंने कहा कि डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह ने सदैव अपनी डयूटी को पूरी जिम्मेदारी से निभाने के साथ-साथ अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक और राष्ट्र भक्ति से ओत-प्रोत ऐसे गीत लिखे जो अन्य के लिए प्रेरणा दायक और प्रेरक हैं। प्रशासन के साथ पूरा तालमेल रखा है।

डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह ने सभी अधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि सूचना, जन संपर्क एवं भाषा विभाग में 32 वर्ष में सेवाएं दी। करनाल, कुरूक्षेत्र, अंबाला और कैथल में अपनी सेवाओं के अलावा करीब 48 सौंग लिखे, जिनमें मतदाता जागरूकता, कोरोना से बचाव, सर्जिकल सट्राईक, गलवान और त्वांग पराक्रम, आवाज फाईनल, मोदी जी के तीर, 48 कोष की परिक्रमा के तहत कैथल जिला में आने वाले तीर्थों की महिमा का व्याख्यान, हर घर तिरंगा इत्यादि ऐसे सौंग है, जो लोगों की दहलीज और दरवाजे तक पहुंचे। सेवाकाल के दौरान सभी स्थानों पर प्रशासनिक अधिकारियों के साथ-साथ विभागीय अधिकारियों व कर्मचारियों ने पूरा सहयोग किया है।

फेयरवेल पार्टी में सूचना, जन संपर्क एवं भाषा विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह को सम्मानित किया। इसके साथ-साथ कुरूक्षेत्र के डीआईपीआरओ नरेंद्र सिंह, एआईपीआरओ बलराम सिंह व करनाल से विभाग के कर्मचारियों ने भी

डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह के आगामी जीवन की शुभकामनाएं देते हुए सम्मानित किया। बता दें कि 32 वर्ष पहले डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह ने विभाग में सेवाएं शुरू की थी। अपनी सेवा काल के दौरान उन्होंने बतौर डीआईपीआरओ करनाल, कुरूक्षेत्र, अंबाला, नूंह व पलवल में भी सेवाएं दी थी। सेवा के दौरान यमुनानगर, जींद, नारनौल, झज्जर, फरीदाबाद में भी विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी थी। वर्तमान में डीआईपीआरओ कैथल के पद से 30 अप्रैल को सेवानिवृत हो रहे हैं।

इस अवसर पर डीसी जगदीश शर्मा, एडीसी डॉ. बलप्रीत सिंह, एसडीएम संजय कुमार, सीटीएम गुलजार मलिक, डीडीए डॉ. कर्मचंद डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह की धर्म पत्नी सुदेश, बिटिया वीरता, कुरूक्षेत्र डीआईपीआरओ नरेंद्र सिंह, एआईपीआरओ कृष्ण कुमार तथा बलराम सिंह, अधीक्षक कर्मबीर सिंह, हाकिम सिंह, रानी देवी, सुभाष चंद लेखाकार परमजीत, राहुल शर्मा, अंकुश शर्मा, दिनेश कुमार, गुरमीत सिंह, प्रोमिला, डीआई रामफल शर्मा, लाजपत, सतपाल, दलबीर, बलबीर शर्मा, जगदीश, जयपाल, राजेंद्र कुमार, रामफल छात्र, रामफल, रवि दत्त, बलवान सिंह, मनोज पुरी, प्रदीप, धीरज, अनिकेत, गुरप्रीत, सुनीता आदि मौजूद रहे।

डीआईपीआरओ धर्मवीर सिंह के बेटे वतन ने जर्मनी ऑनलाईन फेयरवेल पार्टी में जुड़कर जिला प्रशासन के अधिकारियों का स्वागत किया और अपने पिता की पार्टी में शामिल होने के लिए सभी उच्च अधिकारियों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया, वहीं बेटी एडवोकेट वीरता ने भी सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके पिता ने वही संस्कार हमें दिए हैं, जो मेरे दादा और परिवार के लोगों से उन्हें मिले। बचपन के संस्मरण याद दिलाते हुए वीरता ने कहा कि 10वीं की कक्षा में कविता लिखने के लिए कलम उठाने वाला लड़का डीआईपीआरओ के पद तक पहुंचा है। इस मौके पर भतीजे कुलदीप सिंह ने भी प्रशासन के अधिकारियों सहित सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रो. दलीप कुमार ने संभाला कुवि विधि संस्थान के निदेशक का पदभार

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के निर्देशानुसार विधि विभाग के प्रो. दलीप कुमार ने शुक्रवार को कुवि विधि संस्थान के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। लोक सम्पर्क विभाग के उपनिदेशक डॉ. दीपक राय बब्बर ने बताया कि वो 28 अप्रैल से आगामी दो वर्षों या आगामी आदेशों तक विधि संस्थान के निदेशक होंगे।

इस मौके पर प्रो. दलीप कुमार ने कुवि कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा का आभार प्रकट करते हुए कहा कि वो इस महत्वपूर्ण जिम्मेवारी का निर्वहन पूरी ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा के साथ करेंगे।

भविष्य का वैकल्पिक ईंधन

सरकार ने एथेनाल युक्त तेल को 2030 तक जारी करने का लक्ष्य रखा था, मगर इसे अभी शुरू कर दिया गया है। सात साल पहले लक्ष्य तक पहुंचने का जो श्रेय सरकार को जाता है, उसमें एथेनाल के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने वालों को भी निहित समझा जाए। 2013-14 की तुलना में आज एथेनाल का उत्पादन छह गुना तक बढ़ा है, जिससे लगभग 54 हजार करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा बची है।

दुनिया में कच्चे तेल के लिए संघर्ष अपने आप में किसी महायुद्ध से कम नहीं है। यह तमाम देशों के लिए अक्सर चुनौती बनता रहा है। रोचक यह है कि तेल को लेकर अमेरिका जैसे देश कई खेल भी इसी दुनिया में खेलते रहे हैं। गौरतलब है कि अमेरिका भारत का रणनीतिक मित्र है और वर्षों से दोनों के संबंध कहीं अधिक सकारात्मक हैं, मगर ईरान से उसकी दुश्मनी की कीमत भारत को तब चुकानी पड़ी, जब उसने मई 2019 में ईरान से कच्चा तेल लेने पर प्रतिबंध लगा दिया था। आखिरकार इस ऊर्जा की भरपाई के लिए भारत को सऊदी अरब की ओर रुख करना पड़ा था, जो ईरान की तुलना में महंगा सौदा था। फरवरी, 2022 से बदले हालात के बाद रूस से भारत सस्ता तेल खरीद रहा है, जबकि रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते अमेरिका और यूरोप के कई देशों के अलग खेमे बने हैं और भारत को ऐसा करने से रोक पाने में सक्षम भी नहीं हैं।

भारत कच्चे तेल के मामले में आत्मनिर्भर नहीं है। वह अपनी जरूरत का महज 17 फीसद तेल उत्पादन कर पाता है, बाकी के लिए आयात पर निर्भर है। ऐसे में ई-20 ईंधन का स्वरूप इस निर्भरता को कम करने में मदद करेगा, मगर जिस गति से कच्चे तेल की आवश्यकता देश को है, उसे देखते हुए इसे अंतिम उपाय नहीं कहा जा सकता। गौरतलब है कि ई-20 ईंधन का आशय पेट्रोल में एथेनाल के बीस प्रतिशत मिश्रण से है। अभी तक देश में मिलने वाले पेट्रोल में इसकी मिलावट महज दस फीसद होती थी। हालांकि इसे लेकर पेट्रोल के आयात पर असर पड़ेगा, बड़ा असर लाने के लिए इलेक्ट्रानिक वाहन और एथेनाल मिश्रित पेट्रोल को पूरे देश में विस्तार देना होगा। फिलहाल ई-20 ईंधन को ग्यारह राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 84 पेट्रोल पंपों पर उपलब्ध कराया जाएगा।

गौरतलब है कि भारत सरकार ने 'इंडिया एनर्जी वीक 2023' में बीस प्रतिशत एथेनाल मिश्रित पेट्रोल को बीते फरवरी महीने में शुरू किया था और उम्मीद जताई गई थी कि इस पहल से पेट्रोल पर निर्भरता को कम किया जा सकेगा। इसमें कोई दो राय नहीं कि जैव ईंधन को लेकर जितनी सक्रियता आई है, उसके लाभ भी विभिन्न आयामों में विस्तार लेंगे। ई-20 ईंधन कई लाभों से युक्त है, मगर चुनौतियों से भी भरा हुआ है। भारत कृषि अर्थव्यवस्था वाला देश है, व्यापक पैमाने पर कृषि अवशेष उपलब्ध हैं। ऐसे में जैव ईंधन के उत्पादन की संभावना अधिक रहेगी। फलस्वरूप, नई नगदी फसलों के रूप में ग्रामीण और कृषि विकास में यह मदद कर सकता है, बशर्ते नियोजनकर्ता किसानों की सक्रियता और महत्ता को ऊर्जा का केंद्र समझें, न कि महज एक साधन। शहर अकूत अपशिष्ट और कचरे से भरे पड़े हैं। इनका उपयोग कर ईंधन में बदलना संभव होगा, जिससे भोजन और ऊर्जा दोनों मिलेगा।

ई-20 ईंधन से वाहनों को चलाना तो आसान रहेगा ही साथ ही लाभ यह होगा कि जहरीली गैसों से शहर मुक्त भी होंगे। कच्चा तेल खरीदने में तुलनात्मक कमी आएगी, इससे विदेशी मुद्रा के खर्च में कमी आएगी। यह हरित ईंधन का एक ऐसा उदाहरण है, जिससे कार्बन डाईआक्साइड और हाइड्रो कार्बन आदि के उत्सर्जन में कमी संभव है। पड़ताल यह बताती है कि वर्तमान में भारत में एथेनाल की उत्पादन क्षमता लगभग एक हजार 37 करोड़ लीटर है, जिसमें सात सौ करोड़ लीटर गन्ना आधारित और बाकी अनाज आधारित है। 2022-23 में पेट्रोल और एथेनाल वाले ईंधन की आवश्यकता 542 करोड़ लीटर थी, जबकि 2023-24 में यह बढ़ कर 698 करोड़ लीटर है।

बता दें कि कच्चा तेल दुनिया के किसी देश से किसी भी कीमत पर शायद खरीदा जाना संभव है, मगर एथेनाल के औसत को बनाए रखना कहीं अधिक आवश्यक रहेगा। हालांकि आंकड़े इशारा कर रहे हैं कि एथेनाल के मामले में भारत परिपक्व है, मगर सरकार को यह नहीं भूलना चाहिए कि यह पूरी तरह किसान आधारित है और उन्हें इस ऊर्जा में मदद के बदले आर्थिक शुचिता बनाए रखना होगा। महत्वपूर्ण यह भी है कि देश में ऐसी कारें कम हैं, जो ई-20 पेट्रोल से चल सकती हैं। हालांकि कई कंपनियां अपनी गाड़ियां ई-20 ईंधन के अनुरूप बना रही हैं। पूरे देश में जैसे-जैसे ई-20 ईंधन का विस्तार होगा, इससे चलने वाली गाड़ियों का निर्माण भी उसी के अनुरूप होगा।

जैव ईंधन और हरित ईंधन पर निर्भरता लगातार बढ़ रही है, जिसमें कृषि अर्थव्यवस्था और किसानों को सुदृढ़ करने के संदर्भ निहित रहेंगे। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जनवरी में राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन को मंजूरी दी, जिसका उद्देश्य भारत को स्वच्छ ऊर्जा का केंद्र बनाना है। तेल की बढ़ती कीमतें व डालर के मुकाबले गिरता रुपया न केवल कच्चे तेल के लिए मुसीबत बनता है, बल्कि देश के जनमानस को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। हालांकि सस्ता कच्चा तेल मिलने के बावजूद जनता को सरकार ने इसका लाभ नहीं दिया है। तेल का खेल सरकारें भी खूब खेलती हैं और इससे तिजोरी आसानी से भर पाने में सफल होती हैं। जीएसटी लागू होने के बावजूद पेट्रोल, डीजल तथा रसोई गैस समेत ह पदार्थ अब भी इसके दायरे से बाहर हैं, जिसके उतार-चढ़ाव से जनता की जेब ढीली होती रहती है। यह विडंबना ही है कि जो तबका नीतियों से सबसे अधिक प्रभावित होता है और जिसके लिए अधिकांश नीतियां बनाई जाती हैं, वही हाशिये पर है।

भारत का किसान अन्न उत्पादन करके इस मामले में देश को आत्मनिर्भर बना रहा है। आज वही, चाहे गन्ना किसान हो या अनाज उत्पादन करने वाला, ई-20 ईंधन को भी बड़ा मुकाम दे सकता है। मगर क्या उसकी आय दोगुनी करना सरकार के लिए संभव है। 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य सरकार ने रखा था, मगर इस पर कुछ खास पता नहीं चला। सरकार इस कसौटी को और कस कर देखे, क्या पता किसानों की किस्मत ई-20 ईंधन के ईर्द-गिर्द पलटी मारे और उनकी आय दोगुनी हो जाए? मगर सरकार पहले इस बात की भी पड़ताल कर ले कि उनकी पहले आय क्या थी? हालांकि दिसंबर 2018 से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के माध्यम से प्रति चार महीने पर जो दो हजार रुपए सीमांत किसानों के खाते में जाते हैं, अब वे भी कई नई समस्याओं के चलते मामूली हो गए हैं।

गौरतलब है कि सरकार ने एथेनाल युक्त तेल को 2030 तक जारी करने का लक्ष्य रखा था, मगर इसे अभी शुरू कर दिया गया है। सात साल पहले लक्ष्य तक पहुंचने का जो श्रेय सरकार को जाता है, उसमें एथेनाल के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने वालों को भी निहित समझा जाए। 2013-14 की तुलना में आज एथेनाल का उत्पादन छह गुना तक बढ़ा है, जिससे लगभग 54 हजार करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा बची है। इस स्थिति को देखते हुए सरकार ने 2025 तक देश में पूरी तरह ई-20 ईंधन की बिक्री का लक्ष्य रखा है। इसमें कोई दो राय नहीं कि एथेनाल 21वीं सदी के भारत की एक प्रमुख प्राथमिकता बन चुका है, क्योंकि यह पर्यावरण और किसानों के जीवन पर बेहतर प्रभाव डाल सकता है। वैकल्पिक ऊर्जा के माध्यमों पर अभी उतनी तेजी से काम नहीं हो पा रहा है, जितना होना चाहिए। यह काम देश हित में है इसलिए इस काम में सभी को पूरी ऊर्जा के साथ जुटना होगा।

जरनैल रंगा

(6 मई) जयंती विशेष — दलित आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी अछूतानंद ?

स्वामी अछूतानंद ने देशभर में दलित चेतना का अलख जगाया और दलित राजनीति की जमीन तैयार की

जोती राव फुले से भीमराव अंबेडकर तक भारत में दलित आंदोलन का इतिहास जबरस्त उथल-पुथल भरा रहा है। एक तरफ ज्योतिबा का नवजागरण देशभर में फैल रहा था तो दूसरी तरफ इसे रोकने के लिए सवर्णों के प्रयास भी अत्याचार और बदमाशियों की हद लांघ रहे थे। लेकिन कुल मिलाकर बहुसंख्यक दलितों की जमात अपने अधिकारों को लेकर अंधेरे में ही थी। स्वामी अछूतानंद ने इसी अंधेरे में प्रकाश फैलाने का काम किया। दूसरे शब्दों में, उन्होंने ही पूरे देश में दलित चेतना जगाई, जिसकी जमीन पर भीमराव आंबेडकर की राजनीतिक पहल रंग लाई।

कँवल भारती के अनुसार 6 मई, 1879 को मैनपुरी के उमरी गांव में स्वामी अछूतानंद का जन्म हुआ था। बचपन का नाम था हीरालाल। इनके पूर्वज फरुखाबाद में सौरिख गाँव के रहने वाले थे। लेकिन सवर्णों के अत्याचार के कारण उन्हें गांव छोडना पडा और पूरा परिवार उमरी में आकर बस गया था। पूरी बस्ती इनके सतनामी चमार जाति के लोगों की थी। सात साल की उम्र में 1886 में हीरालाल का पलटन के स्कूल में दाखिला करा दिया गया। पढ़ने में रुचि थी, 1893 में चौदह वर्ष की उम्र में उन्होंने मिडिल की पढ़ाई पूरी कर ली।

ये वो दौर था जब सामाजिक न्याय और अस्मिता के लिए दलितों का सवर्णों से जबरदस्त टकराव की स्थितियां थीं। लगभग पूरे उत्तरी भारत के दलितों के भीतर विद्रोह उभरने लगा था। क्रांति दस्तक दे रही थी। नवजागरण की हवा चल रही थी। शिक्षा के दरवाजे भी धीरे-धीरे खुलने लगे थे। सेना में दलितों की भर्ती होने से उन परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक होने लगी थी। हीरालाल के चाचा को भी सेना में नौकरी मिल गई थी। इन्हीं परिस्थितियों में बालक हीरालाल का विकास हुआ।

बचपन से ही घुमक्कडी स्वभाव के हीरालाल 1905 में आर्य समाजी संन्यासी सचिदानंद के सम्पर्क में आये। कहना न होगा कि आर्य समाजियों ने दलितों की बस्तियों में जाकर उनके बीच हिन्दू धर्म की जडें जमा ली थीं। हीरालाल सचिदानंद के शिष्य बन गए और उनका नाम हो गया 'स्वामी हरिहरानंद'। वे आर्य समाज के प्रचारक बन गए और कार्यक्रमों में भी जाने लगे। सत्यार्थ प्रकाश तथा वेदों का अध्ययन किया। पर उनके भीतर नए-नए सवाल उभरने लगे, जिनका आर्य समाज में उत्तर न मिलने पर उन्हें बेचैनी होने लगी।

अंतत: सात वर्ष तक प्रचारक का कार्य करने के बाद 1912 में उन्होंने आर्य समाज छोड दिया और कबीरपंथी हो गए। यहाँ से उनके जीवन में नया अध्याय शुरू होता है। अब वे 'हरिहरानंद' से 'हरिहर' हो गए। उनके भीतर बहुत कुछ बदल रहा था और लोकहित, समाजहित के विचार आने लगे थे। उन्हें हिंदुओं की कथनी और करनी का अंतर दिखने लगा था। ब्राह्मणवाद की परतें उघडने लगी थीं। उन्हें ऐसे अभियान की जरूरत महसूस होने लगी थी, जो दलितों को हिन्दू धर्म और उसकी अमानवीय परम्पराओं से मुक्ति दिलाए जिससे उनके जीवन मे क्रांतिकारी बदलाव आये। उन्होंने 'अछूतानंद' के नाम से बहुजन-हित के आलेख लिखना शुरू कर दिया।

अब हरिहर उर्फ अछूतानंद के सामने दलित समाज का यथार्थ था, जिसे बदलना था। उन्होंने सबसे पहले समाज सुधार का कार्य हाथ में लिया। इसके लिए उन्होंने दलितों की बस्तियों और गांवों में जाना शुरू किया। भ्रमण के साथ वे अध्ययन भी करते रहते थे। कबीर और रैदास को उन्होंने काफी पढ़ लिया था। उनसे उन्हें खूब प्रेरणा मिलती थी। आगरा में समाज सुधार के उनके प्रयासों से दलित परिवारों के बीच शिक्षा आने लगी और उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होने लगा। वीर रतन देवी दास जटिया तथा यादराम जटिया आदि से उन्हें समाज सेवा के कार्यों में बडी मदद मिली। इसके बाद उन्होंने दिल्ली की तरफ रुख किया।

1922 में स्वामी अछूतानंद की अध्यक्षता में दिल्ली में जनसभा हुई, जिसमें प्रिंस ऑफ वेल्स को आमंत्रित कर उनका स्वागत किया गया। इस समारोह मे स्वामी जी ने प्रिंस को 17 सूत्री मांग- पत्र दिया, जिसमे नगरपालिकाओं, टाउन एरिया परिषद आदि में अछूत जातियों को प्रतिनिधित्व दिए जाने की मांग की गई थी। उन्होंने दलितों के राजनीतिक अधिकारों का नाम 'मुल्की हक' रखा था। वे जनसभाओं में अपने भाषण के अंत में यह गीत गाते थे- 'जागो जी जागो असली नाम डुबाने वाले/ वंश डुबाने वाले, राज गंवाने वाले'

युवराज के सामने ही उन्होंने यह घोषणा की कि भारत के दलित 'आदि हिन्दू' हैं और आर्यों से उनका कोई संबंध नहीं है। बाद में उन्होंने 'आदि हिन्दू' की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए 'आदि वंश अष्टक' लिखा और उसे छपवाकर बंटवाया। इस तरह स्वामी जी ने दलित समाज को नया विचार दिया, जो उन्हें उनके इतिहास की ओर ले जाता था। यह भी कहा जा सकता है कि उनका यह विचार दलितों के उनकी जडों की ओर लौटने का संकेत था।

1923 में स्वामी जी ने इटावा आए और लगभग एक वर्ष तक उन्होंने शहर की दलित बस्तियों और गांवों के दौरे किये। दलितों के दुखों, उनकी समस्याओं को जाना। उसी वर्ष इटावा के बडे डाकखाने के मैदान में ऐतिहासिक सम्मेलन हुआ, जिसमें बडी संख्या में लोग आए थे। इससे स्वामी जी की प्रसिद्धि में जबरदस्त इजाफा हुआ। इसके बाद दलित जागरण का दौर शुरू हुआ। पहला वार्षिक सम्मेलन दिल्ली में 1923 में, फिर 1924 में नागपुर में, 1925 में हैदराबाद में, 1926 में मद्रास में, 1927 में इलाहाबाद में, 1928 में बम्बई में, 1929 में अमरावती में हुआ। लखनऊ, कानपुर, मेरठ, मैनपुरी, गोरखपुर, फरुखाबाद और आगरा में भी बडी सभाएं हुईं।

1928 में बम्बई में 'आदि हिन्दू आंदोलन' के राष्ट्रीय अधिवेशन में पहली बार बाबासाहेब डॉ आंबेडकर की स्वामी अछूतानंद जी से भेंट हुई थी। उस समय बाबा साहेब ने इन्हें राजनीतिक लडाई में सहायता करने के लिए धन्यवाद दिया था। बाबा साहेब ने एक बार उन्हें पत्र भी लिखा था, जिसमें उन्होंने उनका उत्साह बढ़ाया था। स्वामी अछूतानंद जबरदस्त स्वाभिमानी थे और नेहरू जैसी शख्शियत को भी जवाब देने में पीछे नहीं रहते थे। कांग्रेस ने दलित वर्ग संघ और श्रद्धानन्द मेमोरियल ट्रस्ट बनवाने में कुछ लोगो की जो मदद की थी, वह असल में आंबेडकर और स्वामी अछूतानंद के प्रभाव को कम करने का खेल था।

स्वामी जी का साहित्य

स्वामी अछूतानंद ने कानपुर में आदि हिन्दू प्रेस स्थापित किया। इस प्रेस से 1925 से 1932 तक 'आदि हिन्दू' मासिक पत्र का नियमित प्रकाशन हुआ। उनके नाटकों में समुंदर मंथन, बलि छलन, एकलव्य और सुदास तथा देवदास थे। 9 फरवरी, 1932 को ग्वालियर में आदि हिन्दू महासभा के कार्यक्रम में उनके द्वारा दिए गए भाषण को हम दलित आंदोलन के इतिहास में मील का पत्थर कह सकते हैं।

स्वामी अछूतानंद ने भारत में सामाजिक बदलाव की हवाओं को तेज किया, जो बाद में आंधी के रूप में परिवर्तित हुईं। 20 जुलाई, 1933 को 54 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई।

मोहनदास नैमिशराय

(5 मई) पर विशेष

बुद्ध पूर्णिमा

तथागत बुद्ध भारत की सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर है। उनका समग्र जीवन दर्शन मानवीय कल्याण के हितार्थ ज्ञान की खोज के लिए मात्र 29 वर्ष की आयु में परम वैभव के साम्राज्य और सांसारिक सुखों के आकर्षण के परित्याग की पराकाष्ठा है। उनका जन्म 583 ईसा पूर्व नेपाल की तराई में लुंबिनी में हुआ था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। जिसका अर्थ है अभिलाषा का पूर्ण हो जाना क्योंकि उनके जन्म से सभी की अभिलाषाएं पूर्ण हुई इसलिए उनका नाम सिद्धार्थ रखा गया।

पिता शाक्य गणराज्य के राजा शुद्धोधन और माता महामाया थी। इनके जन्म को हिमालय के तपस्वी ऋषि असिता ने अलौकिक असाधारण बताते हुए स्वयं जीवात्मा के दर्शन करते हुए कहा कि यह बालक समस्त मानव जाति के लिए सिद्धार्थ है। यह या तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा या लोक कल्याण के लिए धर्म चक्र प्रवर्तित करेगा जो इससे पहले संसार में कभी नहीं हुआ है। पिता चाहते थे कि सिद्धार्थ वैराग्य धारण नहीं करें सम्राट बने। इसलिए संसार की समस्त सुख सुविधाएं सिद्धार्थ को उपलब्ध कराई। रूपवती राजकुमारी यशोधरा से विवाह किया बाद में एक पुत्र राहुल की प्राप्ति हुई, किंतु वे सांसारिक मोह में बंध न सके।

एक दिन मार्ग में उन्होंने अति कृशकाय रोगी, वृद्ध पुरुष तथा एक मृतक को देखा तो सारथी छंदक ने बताया कि एक न एक दिन सभी की यही दशा होनी है। एक साधु को भी देखा। यद्यपि त्रेपिटक आदि ग्रंथों में इन घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। संसार क्षणिक और दुखद ये जान है वे सब कुछ त्याग कर ज्ञान की खोज में निकल पड़े। 6 वर्षों तक घोर तपस्या की किंतु ज्ञान की पिपासा शांत नहीं हुई।

जनश्रुति है कि स्त्रियों के एक गीत को उन्होंने सुना 'वीणा के तारों को ढीला मत छोड़ो, ढीला छोड़ देने से उनसे सुरीला स्वर ना निकलेगा। तारों को इतना कसो भी मत जिससे वे टूट जाएं।' उन्होंने गीत के मर्म को समझा कि किसी भी बात की अति ठीक नहीं। उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाया। इसके बाद गया जाकर वट वक्ष के नीचे इस संकल्प के साथ समाधिस्थ हो गए कि जब तक ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक वे समाधिस्थ ही रहेंगे।

घोर तपस्या के सात दिनों पश्चात उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। वे तथागत और महात्मा बुद्ध हो गए। सबसे पहले बोधगया में बुद्ध ने अपना उपदेश तपस्यु एवं मल्लिक नामक दो बंजारों को दिया। जनसाधारण में ज्ञान की धर्म के रूप में दीक्षा दी। बुद्ध ने बौद्ध संघों की स्थापना की। लगभग 45 वर्षों तक जनसाधारण की भाषा में वे सतत भ्रमण करते हुए धर्म का प्रचार करते रहे। मगध के शासक बिंबिसार एवं अजातशत्रु, कौशल नरेश प्रसेनजीत, प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली और स्वयं बुद्ध के पिता एवं पुत्र ने भी उनके धर्म को स्वीकार किया।

स्त्रियों को भी धर्म की दीक्षा दी गई। 80 वर्ष की अवस्था में कुसिनारा में बुद्ध ने महापरिनिर्वाण को प्राप्त किया।यह संयोग ही है कि उनका जन्म, ज्ञान की प्राप्ति और मृत्यु वैशाख पूर्णिमा के दिन ही हुई। बुद्ध ने अपने धर्म की नैतिक व्याख्या की जो प्राणी मात्र की उन्नति के लिए प्रतिबद्ध है। इस धर्म में कर्मकांड अनुष्ठान पाखंड और अंधविश्वास नहीं है। उन्होंने जीव और जगत को माना। उनका पहला उपदेश धर्म चक्र प्रवर्तन के नाम से विख्यात है जिसके चार प्रमुख सूत्र ही चार आर्य सत्य हैं।

पहला आर्य सत्य है कि इस जगत में दुख है। दूसरा तृष्णा के कारण दुख पैदा होता है। तीसरा दुख के निवारण का उपाय है तृष्णा से बचना और चौथा आदमी के स्वयं के प्रयास से ही दुख निवारण संभव है।

बुद्ध दुख निवारण को भगवान या भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ते। कोई भी व्यक्ति 'दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा' के मार्ग का अनुसरण करते हुए दुखों पर नियंत्रण कर है। यह अष्टांगिक मार्ग है सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि।

बुद्ध ने मध्यम मार्ग अपनाते हुए किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार के अतिवादी व्यवहार से बचने का उपदेश दिया क्योंकि जीवन का सार विरोधी अतिवादों के बीच संतुलन की खोज करने में ही निहित है। उनका यह दर्शन आज के भौतिकवादी मूल्यों की चकाचौंध में जबकि व्यक्ति की इच्छाओं के अनियंत्रित विस्फोट का दौर रुकने का नाम ही नहीं ले रहा है तब यह और ज्यादा उपादेय व प्रासंगिक प्रतीत होता है। यदि लालसाओं का अंत हो जाए तो आदमी संत हो जाए।

बुद्ध ने अपने धर्म में अपने लिए कोई स्थान नहीं रखा उन्होंने कभी किसी को मुक्त करने का आश्वासन नहीं दिया। वे कहते रहे कि वे मार्गदाता हैं मोक्ष दाता नहीं। उनका धर्म मनुष्यों के लिए एक मनुष्य द्वारा आविष्कृत धर्म था जो मौलिक और अलौकिक है।

उन्होंने कभी नहीं कहा कि वे किसी धर्म की स्थापना कर रहे हैं या वे ईश्वर के पुत्र हैं, अवतार या पैगंबर हैं या उन्हें ज्ञान का इलहाम हुआ है। जो बात बुद्धि संगत है तर्कसंगत है वही बुद्ध वचन है। वे धर्म की असमानता और शोषण पर आधारित भेदभाव परक नीतियों और आचरण को छोड़ने के एवं व्यक्ति स्वातंत्रय और बंधुता के पक्षधर थे। उनकी दृष्टि में धर्म तभी सद्धर्म है जब वह सभी के लिए ज्ञान के द्वार खोल दें। ज्ञान केवल विद्वान बनने के लिए पर्याप्त नहीं है वरन उसके साथ प्रज्ञा शील करुणा प्राणी मात्र के प्रति मैत्री उदारता और अहिंसा की भावना विश्व की तरह व्यापक होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब तमाम सामाजिक भेदभावों की दीवारों को गिरा दें। और किसी भी आदमी का मूल्यांकन उसके जन्म से नहीं वरन कर्म से हो।

जो धर्म आदमी आदमी के बीच समानता के भाव की अभिवृद्धि नहीं करता वह धर्म नहीं है क्योंकि आदमी असमान ही जन्म लेते हैं। कुछ मजबूत होते हैं कुछ कमजोर, कुछ अधिक बुद्धिमान होते हैं कुछ कम कुछ एकदम नहीं, कुछ अधिक सामर्थ्यवान होते हैं कुछ कम, कुछ धनी होते हैं कुछ गरीब सभी को जीवन संघर्ष में प्रवेश करना पड़ता है और इस जीवन संघर्ष में यदि असमानता को स्वाभाविक स्थिति स्वीकार कर लिया जाए तो जो कमजोर है उसका तो कहीं ठिकाना ही नहीं रहेगा। इसलिए जो धर्म समानता का समर्थक नहीं है वह अपनाने योग्य नहीं है।

इस दृष्टि से विश्व के अन्य धर्म प्रवृत्तकों की तुलना में बुद्ध का धर्म अधिक जनतांत्रिक नजर आता है।

बुद्ध ने कहा कि मैं ऐसे किसी सिद्धांत को स्वीकार नहीं कर सकता जिसमें सैकड़ों बातों को यूं ही पहले से ही सही मानकर चलना होता है। उनका दृढ़ विश्वास था कि हर व्यक्ति के भीतर अच्छा इंसान बनने की संभावनाएं होती है बशर्ते उस पर विश्वास कर उसे समुचित अवसर परिस्थितियां प्रदान की जाएं।

डाकू अंगुलिमाल का हृदय परिवर्तन बुद्ध ने अपनी निर्मल वाणी से ही किया था। एक दिन बुद्ध धनी व्यक्ति के घर भिक्षा मांगने गए। धनी व्यक्ति ने कहा भीख मांगते हो कामकाज क्यों नहीं करते। खेती बारी ही करो। भगवान बुद्ध ने मुस्कराकर कहा खेती ही करता हूं। दिन रात करता हूं और अनाज भी उगाता हूं। उस धनी व्यक्ति ने पूछा यदि तुम खेती करते हो तो तुम्हारे पास हल बैल कहां हैं? अन्न कहां है? बुद्ध ने कहा मैं अंत:करण में खेती करता हूं। विवेक मेरा हल है और संयम तथा वैराग्य मेरे बैल हैं। मैं प्रेम ज्ञान और अहिंसा के बीज बोता हूं और पश्चाताप के जल से सिंचित करता हूं। सारी उपज मैं विश्व को बांट देता हूं। यही मेरी खेती है।

बुद्ध से एक दिन एक दुखी व्यक्ति ने कहा कि मैं खुशी हासिल करना चाहता हूं। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए। बुद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा कि एक तो मैं को छोड़ दो क्योंकि वह अहंकार है और दूसरे हासिल करना चाहता हूं को छोड़ दो क्योंकि वह लालसा है। इन दोनों को छोड़ दोगे तो मैं खुशी हासिल करना चाहता हूं मैं से खुशी ही शेष बचेगी।

'मैं कहां से आया हूं किधर से आया हूं मैं क्या हूं।' बुद्ध इस प्रकार के व्यर्थ के मानसिक संकल्प विकल्प उठाते रहने के समर्थक नहीं थे। बुद्ध ने कहा कि मन ही सभी चीजों का केंद्र बिंदु है वही सब का मूल है मालिक है कारण है। मन ही शासन करता है योजना बनाता है। यदि आदमी का मन शुद्ध होता है तो वह शुद्ध वाणी बोलता है अच्छे कार्य करता है। मन काबू में है तो सब कुछ काबू में है। इसलिए मुख्य बात मन की साधना है। अपने चित्त को निर्मल बनाए रखना ही धर्म का सार है।

धर्म धार्मिक ग्रंथों के पाठ में नहीं है बल्कि तन मन और वाणी की पवित्रता बनाए रखते हुए तृष्णा का त्याग कर धार्मिक जीवन व्यतीत करने में है। परलोकवाद की बजाए इहलोकवाद पर अधिक बल देते हुए बुद्ध ने लोगों से यह नहीं कहा कि उनके जीवन का उद्देश्य किसी काल्पनिक स्वर्ग की प्राप्ति होना चाहिए। धर्म का राज्य पृथ्वी पर ही है जिसे धर्म पथ पर चलकर प्राप्त किया जा सकता है। इस हेतु बुद्ध ने सात शुभ संकल्पों तथा नैतिक मूल्यों की आचरण संहिता के पालन पर बल दिया जिन्हें दसशील के नाम से जाना जाता है। बुद्ध की संवेदनशीलता अप्रतिम थी। उनकी प्राथमिकता संसार के सभी प्राणियों के दुख दूर करने की थी।

वह कहते हैं तीर से घायल व्यक्ति को देखकर हमारी पहली कोशिश यह होनी चाहिए कि हम उसका तीर निकालें और चिकित्सा करें ना कि उस बेचारे से तीर किसने मारा, क्यों मारा, कैसे मारा जैसे सैद्धांतिक प्रश्न पूछने में समय बर्बाद करें। निसंदेह वर्तमान समय में हमारी संवेदनाएं मृत हो गई हैं। कोविड 19 के विश्वव्यापी संकट ने यह उजागर भी किया है।

अब संवेदनाएं सोशल मीडिया की ही विषय वस्तु रह गई है। सचमुच! बुद्ध आज कितने प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। भारतीय संविधान के निर्माता भारत रत्न डा बी. आर. अंबेडकर ने बौद्ध धर्म तर्क बुद्धि और विवेक की कसौटी पर कसने के बाद ही ग्रहण किया था क्योंकि यह धर्म की असमानता और शोषण पर आधारित भेदभावपरक नीतियों और आचरण को छोड़ने तथा स्वतंत्रता समानता बंधुता प्रज्ञा करुणा और प्राणी मात्र के कल्याण के प्रति समर्पित मानवीय धर्म है।

उनका यह दृढ़ विश्वास था कि चाहे किसी व्यक्ति के विचार समाज के बाकी सभी व्यक्तियों के विचारों के विरोधी हों तब भी उसे अपनी बात कहने का मौका जरूर दिया जाना चाहिए क्योंकि नए विचार पहली बार इसी तरह सामने आते हैं। जो समाज नए विचारों का सम्मान नहीं करेगा वह कभी आगे नहीं बढ़ पाएगा। पाली में एक कहावत है कि सूर्य केवल दिन में चमकता है और चंद्रमा रात्रि में लेकिन बुद्ध अपने तेजस्वी व्यक्तित्व से दिन रात हर समय प्रकाशित रहते हैं।

वे समस्त लोक के प्रकाश स्तंभ अर्थात भुवनप्रदीप थे। दुखियों का दुख दूर करने वाले मानसिक दुखों के महान चिकित्सक बुद्ध को ही यह गौरव प्राप्त है कि उन्होंने आदमी में मूलत: विद्यमान उस निहित शक्ति को पहचाना जो बिना किसी बाह्य निर्भरता के उसे मोक्ष पथ पर अग्रसर कर सकती है। उनका चिंतन कितना शाश्वत है कि जीवन का सार संतुलन में है उसे किसी भी अतिवाद के मार्ग पर ले जाना अर्थहीन है। प्रत्येक व्यक्ति के अंतस में सृजनात्मक सामर्थ्य की असीम संभावनाएं हैं। इसलिए व्यक्ति को आत्म दीपो भव अर्थात अपना दीपक स्वयं बनते हुए किसी का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को 'मैं' के अहंकार भाव से बचते हुए सभी को साथ लेकर चलना चाहिए जो कि जनतांत्रिक और मानवीय गरिमा का सम्मान है। सिर्फ अपने लिए जीना क्या जीना है? उनके विचारों की उपादेयता संदेह से परे है। वे अतीत में भी प्रासंगिक थे आज भी हैं और भविष्य में भी रहेंगे।

साभार – सोशल मीडिया

प्रो. डॉ पी जे सुधाकर ने 132 डिग्रियां प्राप्त कर मनाया बाबा साहब जी का 132 वां जन्मदिवस

17 पीएचडी और 132 डिग्रियां प्राप्त कर चुके प्रो. डॉ पी जे सुधाकर

समाज में महिलाओं की स्थिति समय के साथ सुदृढ़ हुई है। महिलाओं में शिक्षा और जागरुकता का स्तर भी बढ़ा है। लेकिन, महिलाओं की सुरक्षा को लेकर पिछले कुछ समय से अनेक प्रश्न उठने लगते हैं। महिलाओं की सुरक्षा से जुडे कानून को और कडा किया जाए, तो ही शोषण की घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सकता है। यह मानना है डॉ. पीजे सुधाकर का। डॉ. सुधाकर विश्व के एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपनी पढ़ाई के दम पर 132 डिग्रियां हासिल कीं। 40 पोस्ट ग्रेज्यूऐट और 17 पीचडी डिग्रीज के साथ डॉ. पीजे सुधाकर 65 वर्ष की उम्र में अभी भी पढ़ाई का अपना सफर जारी रखे हुए हैं। डॉ. सुधाकर ने 17 वीं पीएचडी ह्यूमन राइट्स में की।

बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी का 132 वां जन्मोत्सव अप्रैल के महीने में विश्व भर में मनाया गया। और ऐसे में प्रो. डॉ. पी जे सुधाकर ने 132 डिग्रियों और 17 पीएचडी के साथ बाबा साहब का जन्मदिवस मनाया। डॉ सुधाकर बताते हैं की उन्हें बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी और महात्मा ज्योतिबा फुले जी से प्रेरणा मिली है। उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। उन्होंने भारतीय संविधान पर टीकाटिप्पणी करने वालों को कहा की पहले संविधान का अवलोकन करो। उन्होंने कहा की सबसे महात्मा ज्योतिबा फुले को महात्मा की उपाधि मिली थी बाकी सब बाद में हैं।

आसानी से नहीं मिली पढ़ाई

डिग्रीयां लेना डॉ. सुधाकर का जुनून नहीं बल्कि नॉलेज शेयरिंग का एक माध्यम है। सन 1957 में आंध्रप्रदेश के विशाखापटनम में जन्मे सुधाकर ने अपना ज्यादातर जीवन पढ़ने में बिताया है। वे बताते हैं कि, मेरे माता-पिता ग्रामीण पृष्ठभूमि के थे। मुझे पढ़ने का अवसर आसानी से नहीं मिला। परिवार के संघर्ष के बाद मैंने स्वप्रेरणा से पढ़ाई की शुरुआत की। मेरी पहली डिग्री लॉ सब्जेक्ट में थी, और अब तक मैंने विभिन्न विश्वविद्यालयों से लॉ की 40 डिग्रीयां हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, तेलगु भाषाओं में ले चुका हूं।

डिग्री नहीं ज्ञान बढ़ाना उद्देश्य

डॉ. सुधाकर बताते हैं कि, मेरा उद्देश्य केवल डिग्रीयों की संख्या बढ़ाना नहीं है, मैं किताबें लिखने के लिए पढ़ाई कर रहा हूं। ताकि, आने वाली पीढ़ी के साथ वे अपना ज्ञान साझा कर सकें। विषय का चुनाव करना आसान नहीं है। किसी विषय में शोध करते रहने की संभावना तभी पैदा होती है, जब अलग-अलग तरह के विषय को समझने की क्षमता आप विकसित करें। मुझे म्यूजिक, राइटिंग, रीडिंग करना पसंद है। मेरे पास मास कम्यूनिकेशन एंड जर्नलिज्म, इंवारमेंट एंड रिसर्च, साइकोलॉजी, ह्यूमन राइट्स और मैनेजमेंट सब्जेक्ट की 5-5 डिग्रीयां हैं। कई सारे पोस्ट ग्रेज्यूऐट डिप्लोमा भी किए हैं। मैं विभिन्न विषयों में 2000 पुस्तकें लिख चुका हूं। इन दिनों द रोल ऑफ लॉयर्स इन इंडियन फ्रीडम फाइटर्स बुक पर काम चल रहा है, जो अगले साल तक रिलीज होगी। डॉ. सुधाकर को अब तक 30 नेशनल अवार्ड मिल चुके हैं। पब्लिक रिलेशन काउंसिल ऑफ इंडिया की ओर से उन्हें चाणक्य अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

बीए, बीएससी, बीपीआर, बीसीजे, एमसीजे, एमएससी, एम (एडवरटाइजिंग, पब्लिक रिलेशन, सोशोलॉजी, ह्यूमन राइट्स, पॉलिटिक्स, पब्लिक एडमिनिसट्रेशन, फिलोस्फी, रिलीजन, हिस्ट्री, संस्कृत, ऐज्यूकेशन, इंटरनेशनल रिलेशन, क्रिमिनोलॉजी, एमफील (जर्नलिज्म एंड पॉलिटिकल साइंस), डॉक्टर ऑफ साइंस, पीएचडी (मेडिसिन, लॉ, थियोलॉजी, एंथ्रोपलॉजी) डी-लिट, एलएलएम (कान्स्टिट्यूशन लॉ, इंटरनेशनल लॉ, लेबर लॉ, एडमिनिस्ट्रेटिव लॉ) पीजी डिप्लोमा (पेटेंट लॉ, आर्बिटरेशन लॉ, सायबर लॉ, चाइल्ड राइट लॉ, इनवारमेंटल लॉ, इंटरनेशनल ह्यूमेनेटेरियन लॉ, जर्नलिज्म, पब्लिक रिलेशन, ह्यूमन राइट लॉ, गाइडेंस एंड कंसलिंग, कम्प्यूटर साइंस, एक्टिंग, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, डिजास्टर मैनेजमेंट, इंवारमेंटल स्टडीज, फोरेंसिक साइंस, ट्यूरिज्म), हिंदी (माध्यमा, प्रवीण, प्रज्ञया)।

(14 मई) पर विशेष छत्रपति संभा जी महाराज की जयंती

पराक्रमी छत्रपति संभाजी महाराज की जयंती, महज 31 साल की उम्र तक 128 युद्ध जीत चुके थे महा योद्धा

मराठा साम्राज्य के महान शासक और योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के सबसे बड़े पुत्र संभाजी महाराज

अद्वितीय योद्धा एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर थे। इन दिन महाराष्ट्र में काफी रौनक देखने को मिलती हैं।

संभाजी महाराज का जन्म 14 मई 1657 को पुणे से 50 किलोमीटर दूर पुरंदर किले में हुआ था। संभाजी महाराज का बचपन दादी की गोद में बीता, पिता शिवाजी हमेशा देशसेवा और युद्ध में व्यस्त रहते थे। महज साढ़े आठ साल में संभाजी महाराज 14 भाषाओं के ज्ञाता बन चुके थे।

संभाजी महाराज के मन में देश सेवा का जज्बा पिता को देखकर जगा। महज नौ साल की उम्र जब बच्चे खिलौनों से खेलते हैं,संभाजी घोड़े पर बैठकर महाराष्ट्र के रायगढ़ से आगरा पहुंचे। यहां ओरंगजेब ने चालाकी से उन्हें पिता सहित बंदी बना लिया। ये संभाजी महाराज की दिलेरी थी कि उन्होंने औरंगजेब की कैद से न केवल पिता को छुड़वाया बल्कि कुछ दिन बाद खुद भी किले से आजाद होकर रायगढ़ पहुंच गए।

कहा जाता है कि वो न्यायप्रिय थे। पिता जी की अनुपस्थिति में संभाजी महाराज नियमित तौर पर जनता दरबार और न्याय दरबार संभाला करते थे। जहां वो जनता की परेशानियां सुनते और उन्हें न्याय मिले, इसका प्रबंध करते। 14 साल तक संभाजी महाराज युद्ध, शासन और अर्थशास्त्र में पूरी तरह पारंगत हो चुके थे। जनता उन्हें बहुत चाहती थी और उनके फैसलों का सम्मान करती थी।

इतनी छोटी सी उम्र में ही संभाजी महाराज ने तीन ग्रंथ लिखे थे। इन तीन ग्रंथों का नाम है, नखशिखांत, नायकिभेद और सात शातक। सात शातक आज भी काफी प्रसिद्ध हैं।

1681 में संभाजी महाराज को विधिवत छत्रपति का ओहदा प्रदान किया गया। कहा जाता है कि महज 31 साल की उम्र तक बेहद शक्तिशाली, बुद्धिमान और स्वाभिमान संभाजी महाराज ने 128 युद्ध जीत लिए थे। कहा जाता है कि संभाजी महाराज धर्म और न्याय के प्रणेता थे और उन्होंने हमेशा मराठा हितों के लिए काम किया।

शिवाजी ने उनको एक राजकुमार की तरह ही बेहतरीन शिक्षा दिलाने की कोशिश की। पढ़ाई के साथ-साथ युद्ध कौशल पर भी उन्होंने कमान हासिल की।

उनकी शादी एक राजनीतिक समझौते के तहत जिवूबाई से हुई थी। उनकी इस शादी से कोंकण का तटीय

इलाका शिवाजी महाराज के कब्जे में आ गया।

कहा जाता है कि सांभाजी महाराज का व्यवहार थोड़ गैर जिम्मेदाराना था। इस वजह से शिवाजी महाराज ने उनको 1678 में पान्हाला के किले में कैद करवा दिया था। लेकिन वह किले से निकल भागे थे और एक साल बाद घर लौटे। फिर उनको पान्हाला के किले में कैद कर दिया गया।

जब शिवाजी का निधन हुआ तो सांभाजी उस वक्त तक पान्हाला के किले में कैद थे। सांभाजी की सौतेली मां सोयाराबाई ने अपने 10 साल के बेटे राजाराम को मराठा साम्राज्य के वारिस के तौर पर सिंहासन पर बिठा दिया। सांभाजी को जब यह समाचार मिला तो वह पान्हाला के किले से निकले और उसे अपने कब्जे में ले लिया। फिर वहां से 20 हजार सैनिकों के साथ रायगढ़ किले की ओर बढ़े और गद्दी पर कब्जा किया।

शासक बनने के बाद उन्होंने अपने सौतेले भाई राजाराम, उनकी पत्नी जानकी बाई और अपनी सौतेली मां को कैद कर दिया।

कहा जाता है कि मुग्रल सम्राट औरंगजेब के बेटे राजकुमार अकबर ने पिता के खिलाफ बगावत की थी। अकबर को सांभाजी महाराज ने ही शरण दिया था। इससे औरंगजेब भड़क गया और सांभाजी का दुश्मन बन गया। उसने सांभाजी और उनके दोस्त कवि कलश को गिरफ्तार कर लिया। औरंगजेब ने सांभाजी को काफी यातनाएं दीं और उनको तड़पा-तड़पा कर 11 मार्च, 1689 को मारा डाला गया।

मराठा इतिहास में संभाजी महाराज का नाम हमेशा सम्मान से लिया जाता रहेगा।

ऐसे वीर योद्धा को सत सत नमन

(29 अप्रैल) विशेष साहित्यकार विजय 'विभोर' जी के जन्म दिवस

जीवन परिचय

साहित्यकार विजय 'विभोर' का जन्म गाँव सालारपुर माजरा, जिला सोनीपत, हरियाणा में 29 अप्रैल 1974 को हुआ था। इनकी जन्मदात्री माता का नाम श्रीमती संतरो देवी था व पिता का नाम करण सिंह है। वे जब लगभग तीन साल के थे तो उनकी माता का देहांत हो गया था। इसके बाद उनकी दादी नन्दकौर ने उनका पालन-पोषण किया। लगभग आठ वर्ष के हुए तो उनके पिता ने दूसरी शादी दर्शना देवी के साथ कर ली और उन्हीं की द्वारा उनको पालन पोषण किया गया। उनके पिता भारतीय सेना में कार्यरत थे व पालने वाली माता गृहिणी थी। उनकी पढ़ाई सोनीपत, बीकानेर, दिल्ली केंट इत्यादि स्कूलों से हुई। उनकी ज्यादातर रूचि अभिनय, संगीत व लेखन में थी। कभी-कभी चित्रकारी भी अच्छी कर लेते थे।वे स्नेहिल मुस्कान, सौम्य भाषा, बेहद मिलनसार व बच्चों से लगाव रखने वाली प्रवृत्ति के थे। उनकी ग्राफिक डिजाईनिग व टाईपिंग पर अच्छी पकड़ थी। 24 वर्ष की उम्र में उनका विवाह आशारानी से हुआ, जिनसे उनको एक पुत्री (तेजस्विनी) व एक पुत्र (दीपांशु) की प्राप्ति हुई। जब उनका विवाह हुआ तब वे दिल्ली में डिजाईनर के तौर पर प्राईवेट नौकरी करते थे। उनका जीवन बड़ा ही संघर्ष पूर्ण रहा। लेकिन कभी भी संघर्षों से नहीं हारे, हमेशां हंसते हुए उनका मुकाबला किया। विवाह के कुछ महीने बाद ही किन्हीं कारणों से ये अपनी पत्नी सहित घर से अलग रोहतक (हरियाणा) में जाकर किराये के मकान में रहने लगे। उसके बाद इन्होंने जवाहर प्रिंटिंग प्रेस, झज्जर रोड़, रोहतक पर डिजाईनर के तौर पर कार्य किया। कुछ साल उन्होने वहीं कार्य किया। इसके बाद इंडस पब्लिक स्कूल रोहतक में डिजाईनर के तौर पर कार्य किया। जहां पर उन्होंने दो-तीन वर्ष कार्य किया, उसके पश्चात् इन्होंने स्वयं का एक छोटा सा कार्यालय दीपांशु ग्राफिक्स के नाम से सुखपुरा चौक रोहतक पर खोला लिया। काम की कमी के कारण मकान व दुकान दोनों का किराया निकालना मुश्किल होता था इसलिए उन्होंने घर से ही डिजाईनिंग का कार्य करना शुरु कर दिया और साथ ही साथ एक-दो अखबार के कार्यालय में डिजाईनिंग का काम ले लिया। इस बीच इन्होंने अपनी पत्नी को आगे पढने के लिए प्रेरित किया व उनका दाखिला 12वीं कक्षा में करवाया। फिर प्रभाकर और आज वह उनकी मेहनत व सहयोग के कारण दो विषयों में स्नातक की डिग्री प्राप्त कर चुकी हैं। धीरे-धीरे इन्होंने आमदनी बढने के कारण अपना कार्यालय महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के नजदीक खोला वहां पर अनेक युवा विद्यार्थी इनके संपर्क में आए। जिन्होंने अपनी डॉक्टर की उपाधि के लिए टाईपसेटिंग व डिजाईनिंग का कार्य करवाया। इनकी स्वभाव व व्यवहार के कारण इनके पास अधिकतर छात्राएं व महिला कार्य करवाने के लिए आती थी। इन सभी दौरों के चलते उनकी मेहनत व सहयोग के कारण इनकी पत्नी की नौकर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में लग गई। फिर उनकी जीवन में कुछ खुशियां आई लेकिन जीवन में संघर्ष ने कभी भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। जिसका परिणाम वर्ष 2016 में एक आंदोलन में हुई तोडफोड़ व आगजनी में इनका कार्यालय भी चपेट में आ गया था। जिसके कारण इन्हें फिर से अपना कार्य घर पर ही करना पड़ा। फिर उन्होंने अपना लेखन कार्य व अभिनय फिर से शुरु करने की ठानी। साहित्य में उनको मार्ग दिखाने में वीरेन्द्र मधुर

(कवि) व वरिष्ट साहित्यकार मधुकान्त का बहुत योगदान रहा है। उन्होंने साहित्यकारों के साथ अनेक साहित्यिक यात्राएं भी की। वे रक्तदान करने और उसको बढ़ावा देने में भी विश्वास रखते थे, उन्होंने रक्तदान पर कहानी तथा लघुकथाएँ भी लिखी। समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने व समाज सुधार के लिए अनेक स्थानों पर विचार गोष्ठियों का आयोजन करवाया। जिसके कारण ''हमारा पांचाल समाज शिक्षा समिति'' ने उनके नाम साहित्यकार विजय 'विभोर' से बच्चों को छात्रवृत्ति देनी शूरू की है।

उन्होंने अनेक लघुफिल्मों के लिए स्क्रिप्ट भी लिखी, निर्देशन व अभिनय भी किया जैसे ''टेंशन'', ''हमारा देश हमारा घर'', ''धारे की बहू'', ''एक डाबड़ा खून'' तथा वेब धारावाहिक ''संसार सुखों का घर है में निर्देशन व अभिनय किया। जनजागृति के विषय पर अनेक अतिलघु फिल्में भी बनाई।

साहित्यकार विजय 'विभोर' ने अपनी लेखनी ब्लॉग, कविता, कहानी, लघुकथा, व्यंग्य, लेख आदि पर चलाई। वर्ष 2012 में ''दिल की बात'' नभाटा, जागरण जोश के माध्यम से ''गलत नहीं हैं खाप पंचायत'' के नाम से प्रकाशित हुआ। हरियाणा साहित्य अकादमी की पत्रिका ''हरिगंधा'' व अन्य पत्र-पत्रिकाओं (जागरण, हरिभूमि, उकलाना रिपोर्ट, गजब हरियाणा इत्यादि) में समय-समय पर इनकी कहानी, लघुकथा, कविता, लेख व आलेख प्रकाशित होते रहे हैं। इनकी पांच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके लगभग छः से सात सांझा संकल प्रकाशित हो चुके हैं। लगभग तीन से चार पुस्तकों पर इनका कार्य चल रहा था जिसको पूरा नहीं कर पाएं और दिनांक 09 अगस्त 2021 को विभिन्न अंगों में संक्रमण फैलने से वह अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर प्रभू चरणों में विलीन हो गए। इनकी अधूरी पुस्तकों को पूरा करने का बीड़ा उनकी जीवनसंगिनी आशा विजय विभोर ने उठाया है, जोकि उनकी मृत्यु उपरांत उन्हीं की तरह साहित्य सेवा में योगदान देते हुए उन्हें आज भी जीवित रखे हुए है।

प्रकाशित पुस्तकें:

अहंकार के अंकुर (कहानी संग्रह, हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित), देख कबीरा हँसा (कहानी संग्रह), फिर वही पहली रात (लघुकथा संग्रह), तेरे बिन गिने दिन (लघुकथा संग्रह, हरियाणा साहित्य के सौजन्य से प्रकाशित)

साँझा संकलन : लघुकथा मंजूशा (लघुकथा संग्रह), लाल सोना (कहानी संग्रह), रोहतक से लघुकथाएँ (लघुकथा संग्रह), रिश्तों की महक (कहानी संग्रह), बासंती अंदाज (काव्य संग्रह) इत्यादि।

पुरस्कार एवं सम्मान

'मेरा अस्तित्व' कहानी, द्वितीय पुरस्कार, हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत, वर्श 2016।

'फिर वही पहली रात कृति', श्रेष्ठ कृति पुरस्कार, हरियाणा साहित्य अकादमी, वर्श 2020।

पिछड़ा वर्ग पत्रकार, लेखक संघ (भारत) वर्ष 2017, विशिष्ट अतिथि सम्मान, अमर उजाला वर्ष 2017।

प्रज्ञा साहित्य मंच, रोहतक (वर्ष 2018), भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय (वर्ष 2018), हिन्दी साहित्य रत्न सम्मान, उत्तर भारतीय हिन्दी साहित्य परिषद, हरियाणा (वर्ष 2018)।

मुख्य अतिथि सम्मान, झज्जर स्कूल खेल, तायक्वोंडो चैम्पियनशिप, झज्जर (वर्ष 2019), पटेल टाइम्स मीडिया अवार्ड, पटेल टाइम्स मीडिया अवार्ड्स, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली (वर्ष 2019)।

फणीश्वरनाथ रेणू आंचलिक संस्कृति संरक्षण, साहित्य, समाजसेवा सम्मान, राष्ट्रीय आंचलिय साहित्य संस्थान, साल्हावास, झज्जर (वर्ष 2020), श्री उदयकरण सुमन स्मृति 'साहित्य गौरव सारस्वत सम्मान, समग्र सेवा संस्थान, सिरसा (वर्ष 2020),

श्री जयलाल दास स्मृति साधक सम्मान, आनन्द कला मंच, भिवानी (वर्ष 2021), नव सृजन सम्मान, समदर्शी प्रकाशन, मेरठ (वर्ष 2021), युवा साहित्यकार सम्मान, श्री मद 'शंकर स्वामी विश्वदेवानन्द तीर्थ धर्मार्थ ट्रस्ट एवं प्रज्ञा साहित्य मंच, रोहतक (वर्ष 2021), वैद्य बीरबल दास की स्मृति में मुन्शी प्रेमचन्द सारस्वत सम्मान, समग्र सेवा संस्थान, सिरसा (वर्ष 2021)।

अमृतवाणी

संत शिरोमणि गुरु रविदास जिओ की

माटी को पूतरा कैसे नचतु है ।।
दैखे दैखे सुने बोले दउरिओ फिरतु है ।।रहाऊ।।

जय गुरुदेव जी

व्याख्याः श्री गुरू रविदास महाराज जी पवित्र अमृतवाणी में फरमान करते हुए कहते हैं कि पांच तत्वों से बना हुआ यह जीव अपने संसार में आने के वास्तविक मनोरथ प्रभु के नाम को भूलकर संसार की माया में फसा हुआ है माया के लिए किस तरह नाचता फिरता है जीव माया की और देख देख कर खुश होता है और उसे माया के बारे में बोलना और सुनना अच्छा लगता है ।यह माया के प्रभाव में ही भाग दौड़ कर रहा है ।
धन गुरुदेव जी

मृत्यु के उपरांत क्या ?

एक बार बुद्ध से मलुक्यपुत्र ने पूछा, भगवन आपने आज तक यह नहीं बताया कि मृत्यु के उपरान्त क्या होता है? उसकी बात सुनकर बुद्ध मुस्कुराये, फिर उन्होंने उससे पूछा, पहले मेरी एक बात का जबाव दो । अगर कोई व्यक्ति कहीं जा रहा हो और अचानक कहीं से आकर उसके शरीर में एक विषबुझा बाण घुस जाये तो उसे क्या करना चाहिए ? पहले शरीर में घुसे बाण को हटाना ठीक रहेगा या फिर देखना कि बाण किधर से आया है और किसे लक्ष्य कर मारा गया है।

मलुक्यपुत्र ने कहा, पहले तो शरीर में घुसे बाण को तुरंत निकालना चाहिए, अन्यथा विष पूरे शरीर में फ़ैल जायेगा ।

बुद्ध ने कहा, बिल्कुल ठीक कहा तुमने, अब यह बताओ कि पहले इस जीवन के दुखों के निवारण का उपाय किया जाये या मृत्यु की बाद की

बातों के बारे में सोचा जाये । ज्मलुक्यपुत्र अब समझ चुका था और उसकी जिज्ञासा शांत हो गई।

कैलिफोर्निया में जाति आधारित भेदभाव पर प्रतिबंध की मांग वाला बिल पास

कैलिफोर्निया स्थित इक्वैलिटी लैब्स की संस्थापक और 'द ट्रॉमा ऑफ कास्ट' की लेखक थेनमोझी साउंडराजन ने कहा कि आज मैं जाति उत्पीड़ति समुदाय के सदस्यों के साथ खड़ी हूं। जाति समानता को लेकर लड़ाई लड़ रहे लोगों के एकजुटता को लेकर गर्व महसूस कर रही हूं।

भारतीय-अमेरिकी व्यापार और मंदिर संगठनों के कड़े विरोध के बीच कैलिफोर्निया में जातिगत भेदभाव पर स्पष्ट रूप से प्रतिबंध लगाने वाला एक विधेयक राज्य की सीनेट न्यायपालिका समिति द्वारा सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया है।

कैलिफोर्निया की सीनेट न्यायपालिका समिति ने मंगलवार को सर्वसम्मति से जाति-विरोधी भेदभाव बिल को सीनेट के पास भेजने के लिए सहमति जताई थी। बता दें, यह पहली बार है जब अमेरिका की राज्य विधानसभा जाति भेदभाव संबंधित कानून पर विचार किया गया है। यदि बिल पारित हो जाता है, तो अमेरिका का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य कैलिफोर्निया जाति-आधारित पूर्वाग्रह को खत्म करने वाला देश का पहला राज्य बन जाएगा।

कैलिफोर्निया स्थित इक्वैलिटी लैब्स की संस्थापक और 'द ट्रॉमा ऑफ कास्ट' की लेखक थेनमोझी साउंडराजन ने कहा कि आज मैं जाति उत्पीड़ति समुदाय के सदस्यों के साथ खड़ी हूं। साथ ही जाति समानता को लेकर लड़ाई लड़ रहे लोगों के एकजुटता को लेकर गर्व महसूस कर रही हूं। उन्होंने कहा कि कैलिफोर्निया के लोगों को अब अपना हक मिल जाएगा। जिस सुरक्षा के लिए वह लड़ाई लड़ रहे थे, उसे उन्होंने करीब करीब प्राप्त ही कर लिया है।

कई सालों से चल रही लड़ाई

15 साल से चल रही लड़ाई को लेकर साउंडराजन ने कहा था कि इस बिल की आवश्यकता है। हमारे पास राज्य में किसी भी एशियाई अमेरिकी समुदाय के भेदभाव की उच्चतम दर है। यही कारण है कि हम अपनी आजादी के लिए लड़ रहे हैं।

लोगों ने किया समर्थन

हिंदू फॉर कास्ट इक्विटी की पूजा रेन ने विधेयक की पहली बड़ी बाधा दूर होने के बाद कहा कि जातिगत भेदभाव गैरकानूनी और अन्यायपूर्ण है। यह विधेयक हम सभी को जाति की भयावहता से उबारेगा। वहीं, प्रोग्रेसिव कॉकस के डेमोक्रेटिक चेयर अमर शेरगिल ने कहा कि कैलिफोर्निया ने स्पष्ट कर दिया है कि वह किसी भी तरह के भेदभाव या हिंसा को बर्दाश्त नहीं करेगा।

पिछले महीने हुआ था बिल पेश

गौरतलब है, राज्य की विधायिका के लिए चुनी गई पहली मुस्लिम और अफगान अमेरिकी सीनेटर आयशा वहाब ने पिछले महीने बिल पेश किया था।

इन्होंने की आलोचना

हिंदू मंदिर कार्यकारी सम्मेलन, उत्तरी अमेरिका में हिंदू मंदिरों का एक छात्र संगठन, हिंदू बिजनेस नेटवर्क और हिंदू पॉलिसी रिसर्च एंड एडवोकेसी कलेक्टिव ने भी बिल की आलोचना की। एशियन अमेरिकन होटल ओनर्स एसोसिएशन के बोर्ड सदस्य कल्पेश जोशी ने कहा कि हम बिल के सख्त खिलाफ है। हम मानते हैं कि यह भारतीय होटल और मालिकों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा।

वहीं, एशियन अमेरिकन शॉप ओनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विपुल पटेल ने कहा कि यह बिल अमेरिका में जातिगत भेदभाव के मनगढ़ंत आख्यान पर आधारित है। उन्होंने कहा कि हमें डर है कि अगर यह विधेयक पारित हो जाता है, तो छोटे व्यवसायों के खिलाफ छोटे छोटे मुकदमों को बढ़ावा मिलेगा।

हिंदू मंदिर कार्यकारी सम्मेलन के संयोजक तेजल शाह ने कहा कि बिल के पीछे संगठनों और लोगों ने हिंदू रीति-रिवाजों और परंपराओं के लिए अपना तिरस्कार स्पष्ट कर दिया है।

अमेरिका के सिएटल में जातिगत भेदभाव पर प्रतिबंध

हाल ही में अमेरिका का सिएटल जाति के आधार पर भेदभाव को बैन करने वाला पहला शहर बना था। सिएटल सिटी काउंसिल ने भेदभाव विरोधी कानून में जाति को जोड़ दिया है। इस कानून को लागू करने के लिए बकायदा मतदान हुआ था। इस नए अध्यादेश का समर्थन करने वालों ने कहा था कि भेदभाव राष्ट्रीय और धार्मिक सीमाओं को पार करता है और ऐसे कानूनों के बिना, जातिगत भेदभाव का सामना करने वालों की कोई सुरक्षा नहीं हो सकती है। बता दें यह पहली बार था जब अमेरिका के किसी शहर ने जाति आधारित भेदभाव को दूर करने के खिलाफ कानून बनाया।

सोशल मीडिया

ऐहि पस्सिको

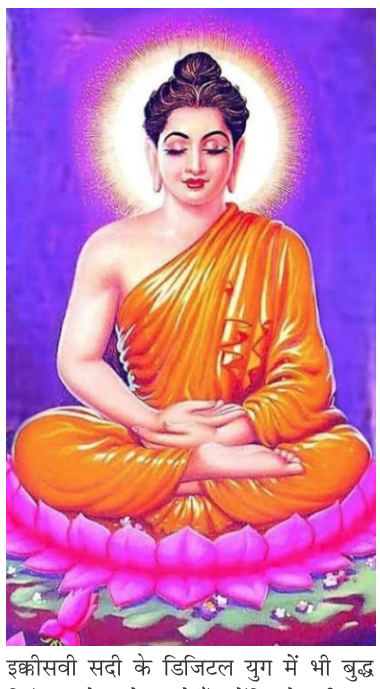

इक्कीसवी सदी के डिजिटल युग में भी बुद्ध निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं क्योंकि जो बड़ी बात बुद्ध ने कही वह यह है- ऐहि पस्सिको ! अर्थात आओ ! इस धम्म को देखो, खोजो, जानो फिर मानो.... दुनिया में इतनी आज़ादी आज तक किसी ने नहीं दी।

बुद्ध का यह फॉर्मूला साइंस का फॉर्मूला है। भला बिना खोजे, बिना प्रमाण और अनुभव के कोई कैसे मानेगा। इसलिए बुद्ध ने कहा हर बात को आंख मूंदकर मत मानो।

बुद्ध का धम्म साइंस का धम्म है। विवेक और समझ रखने वाले समझदारों का धम्म है। अध्ययन, ध्यान और खोज करने वाले साहसी लोगों का धम्म है. यहां शॉर्टकट नहीं है। और संदेह कर खोज करना साइंस का पहला स्टेप होता है।

तथागत ने कहा दूसरों के थौपे हुए विश्वासों को तोड़ो, डर से पैदा की हुई श्रद्धा को छोड़ो, रेत के महल जैसी धारणाओं को गिराओ. और अपना दीपक जलाओ।

एक साइंस के स्टूडेंट की तरह खोज, प्रमाण व अनुभव के आधार पर अपनी धारणाएं और विचार बनाओ।

आज के डिजिटल जमाने में बुद्ध ज्यादा प्रासंगिक नजर आ रहे हैं और भविष्य में जैसे जैसे लोगों में साइंटिफिक टेंपरामेंट बढ़ता जाएगा, समय बुद्ध की विचारधारा के और अधिक अनुकूल होता जाएगा।

जैसे जैसे लोग सोचने, विचारने और चिंतन की गहराई में उतरेंगे। लोग स्वयं की सुख शांति के साथ मानव समाज के भले की बातों के बारे में भी सोचने लगेंगे, काल्पनिक अंधविश्वास आडंबर और सड़ी गली धार्मिक मान्यताएं व विश्वास धराशायी होते जाएंगे।

अब लोग हर किसी बात को मानने के लिए राजी नहीं होंगे। चाहे उसके पिता, शिक्षक या धर्मगुरु ही क्यों न कहे।

अब लोगों के अंदर वैचारिक बगावत बढ़ेगी, लोग मानव कल्याण से परे निरर्थक बातों का विरोध करने की हिम्मत जुटाएंगे। धर्म के नाम पर लूट , शोषण व अमानवीय बातों के खिलाफ विद्रोही होंगे और वैसे वैसे बुद्ध जैसे कल्याण मित्रों की बात लोगों को अपनी लगेगी, अपने करीब लगेगी, प्रिय लगेगी।

आज दुनिया में जितना आदर व सम्मान बुद्ध का है किसी और का नहीं है। साधारण व्यक्ति ही नहीं बल्कि बड़े विचारक, लेखक, चिंतक और वैज्ञानिक के मन में भी बुद्ध के प्रति आदर रोज बढ़ता जा रहा है और बाकी के प्रति आदर बढ़ नहीं रहा है।

देश दुनिया में झूठी विचारधाराएं भरभरा कर गिरती जा रही है। वे अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं जबकि बुद्ध बिना संघर्ष किए विश्वभर के लोगों के मन में बसते जा रहे हैं क्योंकि बुद्ध की वाणी में प्रेम, करुणा और मैत्री के साथ तर्क, विवेक, ज्ञान और विज्ञान है। मनुष्य के कल्याण व सुख शांति का मार्ग हैं। बुद्ध का धम्म भविष्य का धम्म है।

भवतु सब्बं मंगलं....सबका मंगल हो..सभी प्राणी सुखी हो

आलेख : डॉ. एम एल परिहार , जयपुर।

सुख कहां ?

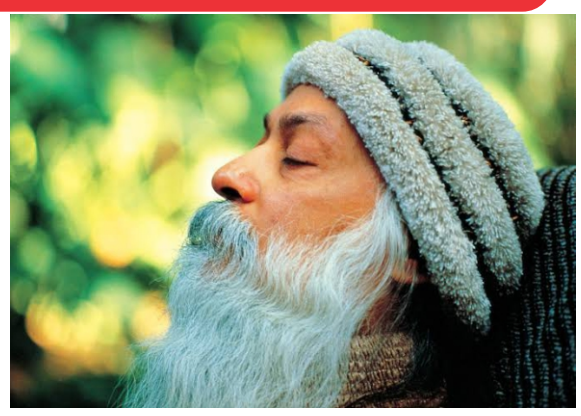

एक आदमी निरन्तर रोता था, जाके मंदिर में कि, 'हे प्रभु, मुझे इतना दुखी क्यों बनाया ? आखिर मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है ? ये अन्याय हो रहा है। और मैं तो सुनता था, तू बड़ा न्यायी है, दुख हरता है, दयालू है, कृपालु है, महाकरुणावान है ! मगर सब धोखे की बातें हैं। मुझे इतना दुख क्यों दिया ? सब मजे में हैं। सब आनन्द कर रहे हैं। मैं ही दुख में सडा जा रहा हूँ। कुछ कृपा कर ! अगर सुख न दे सके तो कम से कम इतना तो कर कि किसी और का दुख मुझे दे दे, ये मेरा दुख किसी और को दे दे। इतना तो कर !'

उसने एक रात सपना देखा कि कोई आवाज आकाश से कह रही है कि, 'सब लोग अपने-अपने दुख लेके मंदिर मे पहुँच जाएँ। वो तो बड़ी जल्दी तैयार हो गया। उसने जल्दी से अपना दुख बाँधा, पोटली उठाई, भागा मंदिर की तरफ। खुद भी भागा, उसने देखा, बड़ा हैरान हुआ, पूरे गाँव के लोग अपनी-अपनी पोटलियाँ लिए जा रहे हैं।

वो तो सोचता था जिनके जीवन में कोई भी दुख नहीं है...राजा भी भागा जा रहा है ! वजीर भी भागे जा रहे हैं। नेता भी भागे जा रहे हैं, पण्डित-पुरोहित भी भागे जा रहे हैं ! उसने मौलवी को भी देखा, वो भी अपना गठ्ठर लिए चला जा रहा है। सबके गठ्ठर हैं। और एक और बात हैरानी की मालूम हुई... किसी के पास छोटी-मोटी पोटली नहीं। क्योंकि वो सोचने लगा कि, 'किससे बदलना है अगर बदलने का मौका आ जाए। मगर सब बड़ी-बड़ी पोटलियाँ लिए हुए हैं। ये तो पोटलियाँ कभी दिखाई भी नहीं पड़ी थीं उसको।

अभिनय चलता है. मंदिर में पहुँच गए। बड़ा उत्तेजित ! सारे लोग उत्तेजित हैं कि कुछ होने वाला है ! और फिर एक आवाज हुई कि, 'सब लोग मंदिर की खूँटियों पर अपनी-अपनी पोटलियाँ टाँग दें।

सबने जल्दी से टाँग दीं। सभी छुटकारा पाना चाहते हैं। और फिर एक आवाज हुई कि, 'अब जिसको जिसकी पोटली चुननी हो, चुन ले, बदल लें।'

और वो आदमी भागा ! और सारे लोग भागे। मगर चकित होने की बात तो ये थी कि उस आदमी ने भाग के अपनी पोटली फिर से उठा ली, कि कोई दूसरा न उठा ले। और यही हालत सबकी थी... सबने अपनी-अपनी उठा ली।

वो बड़ा हैरान हुआ, लेकिन अब बात उसके ख्याल में आ गई। उसने अपनी क्यों उठाई ? सोचा कि, 'अपने दुख कम से कम परिचित तो हैं, दूसरे का बड़ा पोटला है, और पता नहीं, इसके भीतर क्या हो ! अपने दुख कम से कम जाने-माने तो हैं, उनके साथ जीते तो रहे हैं जिन्दगी भर, धीरे-धीरे अभ्यस्त भी हो गए हैं। और अब धीरे-धीरे उतना उनसे दुख भी नहीं होता।

काँटा गड़ता ही रहा हो, गड़ता ही रहा हो, गड़ता रहा हो तो धीरे-धीरे चमड़ी भी मजबूत हो जाती है; उस जगह काँटा गड़ते-गड़ते-गड़ते, फिर चमड़ी में उतना दर्द भी नहीं होता। सिरदर्द जिन्दगी भर होता ही रहा तो धीरे-धीरे आदमी भूल ही जाता है... सिरदर्द और सिर में कोई फर्क हीनहीं नहीं रह जाता। एक अभ्यास हो जाता है।

और तब उसे समझ में आया कि सबने अपने-अपने उठा लिए... सब डर गए हैं कि, 'कहीं दूसरे का न उठाना पड़े, पता नहीं दूसरे की अपरिचित पोटली, भीतर कौन से साँप-बिच्छू समाए हों !'

प्रत्येक ने अपनी-अपनी पोटलियाँ उठा लीं और सब बड़े खुश हैं कि अपनी पोटली वापस मिल गई। और सब अपने घर की तरफ भागे जा रहे हैं। सुबह जब उसकी नींद खुली, तब उसे सच्चाई समझ में आई... ऐसा ही है।

यहाँ सब दुखी हैं। मगर एक अभिनय चल रहा है। इस अभिनय से जो जाग गया उसके जीवन में ही संन्यास का जन्म होता है। अभिनय से जाग जाना संन्यास है। जो साक्षी हो गया वो जी गया । जिसने परमात्मा से प्रेम किया वही आनंद से पूर्ण है वही सुखी है ।

ओशो

विज्ञापन, लेख व समाचार प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें :
91382-03233
gajabharyananews@gmail.com

बुलेट से पटाखा बजाया तो पडेगा भारी हर्जाना: एसपी
साईलेंसर चेंज करने वाले दुकानदारों के खिलाफ भी होगी कार्यवाही

गजब हरियाणा न्यूज/ जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, जिला पुलिस ने बुलेट मोटरसाईकिल से पटाखे बजाने वालों पर शिंकजा कसना शुरु कर दिया है । पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र सिंह भोरिया ने बुलेट मोटरसाईकिल पर पटाखे बजाकर ध्वनि प्रदूषण फैलाने वाले तथा आमजन को परेशान करने वाले बुलेट मोटरसाइकिल चालकों के खिलाफ कारवाई करने बारे सभी प्रबंधक थाना को आदेश दिए हैं । अपने आदेश में पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिन मोटरसाईकिल चालकों के पास कागजात पूरे ना हो तो उनकी मोटरसाईकिल को इंपाउंड किया जाये। वहीं दुकानदारों को भी मोटरसाइकिल के साइलेंसर चेंज ना करने बारे हिदायत दी गई।

पुलिस अधीक्षक ने आम नागरिकों, विशेषकर युवा वर्ग से अपील करते हुए कहा कि भविष्य में कोई भी बुलेट मोटरसाईकिल चालक मोटरसाईकिल पर पटाखे ना बजाए क्योंकि इससे ध्वनि प्रदूषण तो होता है साथ में पटाखे की तेज आवाज होने से भय के कारण बड़ी दुर्घटना हो सकती है। उन्होंने कहा कि भविष्य में कोई भी बुलेट मोटरसाईकिल चालक मोटरसाईकिल पर पटाखे बजाएगा तो उसके खिलाफ कानूनी कारवाई की जाऐगी। उन्होंने दुकानदारों विशेषकर बुलेट मोटरसाईकिल की रिपेयर करने वाले दुकानदारों को बुलेट मोटरसाईकिल का साइलेंसर चेंज करेगा तो उसके खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

इस बारे मे जानकारी देते हुऐ पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र भोरिया ने कहा कि जिला में बुलेट मोटरसाईकिल से पटाखे बजाने वालो की शिकायतें मिल रही थी। आमजन की सुविधा को ध्यान मे रखते हुऐ जिला पुलिस द्वारा विशेष अभियान चलाकर बुलेट मोटरसाईकिल से पटाखे बजाने वाले चालको के चालान किये जायेंगे। उन्होने कहा कि यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

जन्म मरण के चक्कर से छुटकारा पाना गहनता से चिंतन करने का विषय : महामंडलेश्वर

जिज्ञासु आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ाकर आत्मिक जिज्ञासा को शांत करना चाहते हैं : एडवोकेट

कुछ ऐसे भी होते है जिनको अध्यात्म से कुछ लेना-देना नही है बस बोरियत से बचने और टाईम पास करने के लिए सत्संग में आते हैं : स्वामी ज्ञाननाथ

गजब हरियाणा न्यूज/राहुल

अम्बाला । निराकारी जागृति मिशन नारायणगढ़ के गद्दीनशीन राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संत सुरक्षा मिशन भारत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर एडवोकेट स्वामी ज्ञान नाथ ने रूहानी प्रवचनों में कहा आमतौर पर सभी की सबसे पहली और तीव्र यही इच्छा होती है कि मेरा जीवन सुखी, समृद्ध और आनंदमय हो जाए, मुझे जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा मिल जाए, संसार का आवागमन समाप्त हो जाए। परंतु यह कैसे संभव हो सकता है यह विचार और गहनता से चिंतन करने का विषय है। दिन-रात अथक परिश्रम करके धन-संपदा और संसार की अनेकों जड़ वस्तुएं प्राप्त कर ली, रिश्ते-नातों को भी जैसे कैसे निभाया, दूसरों से धोखा, छल-कपट और अन्य तौर-तरीकों से यश-मान, कीर्ती भी प्राप्त कर ली, वाहावाही भी खूब बटोरी परंतु वास्तव में तो क्या सपने में भी सुख-शांति और सुकुन नही मिला। अगर ब्रह्ज्ञान एवं तीर्व विवेक की दूष्टि से देखा जाए तो कि सुख-शांति, सबर-संतोष संसार की किसी भी वस्तु और व्यक्ति में नही मिल सकता। सबसे ज्यादा जरूरत सदविचारों, नित्यप्रति आत्म साधना-अराधना, आत्मनिरीक्षण, आत्ममथंन, आत्मचिंतन, आत्मज्ञान-ध्यान, और आमबोध की है। वास्तविक सुख और अक्षय आत्म आनंद

साधक के विचारों, अंतःकरण में निरंतर उठते उदगारों-फुरणाओं की परमशून्यता की एक विशेष स्थिति है और यह परम आनंद की अवस्था अपने आप में, अपने अी द्वारा प्राप्त की जा सकती है कहीं बाहरमुखि अनाप-शनाप कर्मकांडों, अंधविश्वास और निरर्थक बहसबाजी से नही। जीवन में अक्षय आनंद, सबर-संतोष और सुकुन पाने के लिए विचारों की साधना करनी होगी। नकारात्मक विचारों को छोड़कर अंतःकरण में सकारात्मक विचारों का सृजन करना होगा। अध्यात्म की शरण में आने वाले जिज्ञासुओं का अलग-अलग लक्ष्य होता है। कुछ लोगों का लक्ष्य जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पाकर निर्वाणगति अर्थात मोक्ष-मुक्ति को प्राप्त करना होता है। कुछ लोगों का मकसद सिर्फ संसार की जड़ वस्तुओं को संग्रह करना, यश-मान, कीर्ती, सुख-सुविधाएं प्राप्त करना, वाहावाही लूटना और जीवन की कठिनाइयों से छुटकारा पाना होता है। कुछ साधक अपना आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ाकर अपनी आत्मिक जिज्ञासा को शांत करना चाहते हैं और कुछ ऐसे भी होते है जिनको अध्यात्म से कुछ लेना-देना नही है बस बोरियत से बचने और टाईम पास करने के लिए सत्संग में आते हैं। अब आप अपने अंतःकरण में झांककर देखो कि आप किस श्रेणी में आते है। दाना-बीना अर्थात गिने-चुने जिज्ञासु ऐसे होते है तो इस एकरस अज्ञात और ओत-प्रोत मालिकेकुल जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा को जानने-पहचानने और अध्यात्म के इस परम-चरम रहस्य को समझने के लिए प्रयास करते है। ऐसे ज्ञानवान महापुरूष बाहर और भीतर से जीवन का रूपांतरण और उद्धार-सुधार करने के लिए संत शरण में आते हैं। ऐसे महापुरूष कर्मयोगी बनकर परमार्थ और पुरूषार्थ करते हुए लोक-परलोक दोनों को सुधार लेते हैं।

ऐसे महापुरूष ब्रह्ज्ञान की नित्यप्रति साधना करते हुए अपने प्रारब्ध, संचित और वर्तमान के कर्मो के जखीरे को समाप्त करके मनुष्य जीवन को ज्ञानमय-आनंदमय और सार्थक सिद्ध कर लेते हैं।

प्रोफेसर सुमेधा धनी ने देश व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कीर्तिमान स्थापित किए

विश्व भ्रमण कर चुकी है प्रोफेसर सुमेधा धनी, जो अनोखी प्रतिभा की धनी है

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

रोहतक । डॉ. भीमराव अम्बेडकर जन्मोत्सव समिति गुरूग्राम द्वारा 23 अप्रैल को लघु सचिवालय के सामने राजीव चौक के पास विश्व रत्न बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर जी का 132वां जन्मोत्सव समारोह भव्य तरीके से मनाया गया। जिसमे एकादमिक दुनिया से दो वक्ताओं को आमंत्रित किया गया, जिसमें डॉ लक्ष्मण यादव, सहायक प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय व हरियाणा से महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक की प्रोफेसर सुमेधा धनी जोकि राज्य, देश व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता हैं जिन्होंने विभिन्न कीर्तिमान स्थापित किये हैं। वह पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में 32वें वर्ष में शिक्षण कार्य कर रही हैं व एकादमिक विश्व भ्रमण कर चुकी है जो अनोखी प्रतिभा की धनी हैं। महाराष्ट्र से मन्यामार, कश्मीर से कन्याकुमारी, अरूणाचल से अमेरीका, हरियाणा से आस्ट्रेलिया, यूनाईटिड किंगडम, यूरोप, कनाडा, सिंगापुर, थाईलैंड तुर्की में विश्व रिकार्ड स्थापित कर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक का नाम स्कॉटलैंड, फ्रांस इत्यादि में पहुंचा चुकी हैं। उनके पुरस्कारों में 2021 में हरियाणा सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार सहित अन्य 24 पुरस्कार सम्मिलित हैं। रेडियो, टेलीविजन पर अनेकों प्रोग्राम दे चुकी प्रों. सुमेधा धनी अनेक अंतराष्ट्रीय मंचों पर भी बतौर एक्सपर्ट अपनी बात रख चुकी हैं।

समारोह में बोलते हुए उन्होंने कहा कि देश डॉ अम्बेडकर का सदैव कर्जदार रहेगा। वह विलक्षण प्रतिभा के धनी थे व ताउम्र संघर्ष कर दुनिया व भारत में सर्वोच्च सेवा दे पाये। 132 वर्ष पूर्व देश में अंग्रेजों का राज था। हालांकि अग्रेजों को बहुत गालियां दी जाती हैं पर देश को 18वीं 'शताब्दी से बाहर निकालने वाले भी अंग्रेज ही थे जिन्होंने सार्वभौमिक शिक्षा भारत में लाकर देष को शिक्षित करने का काम भी किया तथा देश में स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों का निर्माण करवाया, अस्पताल खुलवाये, रेलवे को भारत में लाये, हावड़ा जैसे पुलों का निर्माण करवाया जोकि आजतक खड़े हैं। देश के सारे प्रमुख व्यक्ति जैसेकि नेहरू, गांधी, टैगोर राजघरानों के राजकुमार सभी इंग्लैड व अमेरिका में पढ़ने जाया करते थे, जो सब रईस घरानों से थे। परन्तु डॉ अम्बेडकर एक गरीब परिवार से सम्बंध रखते थे व अपनी मेहनत के बल पर ही वजीफा प्राप्त कर अमरीका पढ़ने गये। संविधान का मसौदा तैयार करने वाली सभा के सदस्य और आखिर में उनको दी गई पूरी जिम्मेदारी और मेहनत से स्वयं पूरा किया। इस काम में उन्हे 2 साल 11माह 18 दिन में भारत का संविधान सरकार को समर्पित किया। नेहरू मंत्री मंडल में देश के प्रथम कानून मंत्री बने। डॉ अम्बेडकर देश के सबसे अधिक पढ़े व्यक्ति थे। जिन्होंने विदेश से अनेको डिग्रीयां प्राप्त की। उस ज्ञान का उपयोग भारत के रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना में किया। वह एक समाजशास्त्री, विधिवेता व अर्थशास्त्री थे। हिंदु महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए हिंदु कोड बिल लाये - 1948 में प्रस्तुत किया। सरकार ने पास नहीं किया तो डॉ अम्बेडकर ने 1951 में त्यागपत्र दे दिया। श्रीलंका की राजधानी कोलम्बों में प्रथम विश्व बौद्ध महासम्मेलन में उनको 'विश्व का कानूनी पिता' की उपाधि से सम्मानित किया गया इसके लिए उन्होंने बहुत से प्रश्नों व तर्कों के सही उत्तर दिये थे। 70 वर्श पूर्व की गई पंचशील ध्वज की परिकल्पना को डॉ अम्बेडकर ने 1950 में श्री लंका में अंतिम रूप दे, परिपूर्ण किया। श्रीलंका में ही डॉ अम्बेडकर को उनके महान कार्य के लिए बौधिसत्व की उपाधि दी गई। उन्होंने अपने जीवन में अनेकों सोसाइटी व कॉलेजों का निर्माण किया। वे भारत के प्रत्येक बच्चे को शिक्षित देखना चाहते थे। उन्ही के विचारों से आगे जाकर 6 से 14 वर्ष तक की अनिवार्य षिक्षा का कानून बना। प्रो सुमेधा धनी को एक बूके व सुन्दर 'शील्ड स्मृति स्वरूप दी गई। पहली भारतीय महिला बॉडी बिल्डर व राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विश्व पदक विजेता प्रिया सिंह मेघवाल मुख्य अतिथि रही व कार्यक्रम की अध्यक्षता सुमित चौहान ने की।

लोक संपर्क विभाग की भजन पार्टियों के एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

सरकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का दिया संदेश

बतौर मुख्यतिथि मेयर रेणूबाला गुप्ता, मुख्यमंत्री के मीडिया कॉर्डिनेटर जगमोहन आनंद, भाजपा के जिलाध्यक्ष योगेंद्र राणा, मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि संजय बठला ने की शिरकत

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल । सूचना, लोक संपर्क, भाषा तथा संस्कृति विभाग की भजन पार्टियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन बुधवार को करनाल के डॉ. मंगल सैन सभागार में किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर की अध्यक्षता मुख्यमंत्री के ओएसडी पब्लिसिटी गजेंद्र फौगाट ने की। इस दौरान बतौर मुख्यतिथि मेयर रेनू बाला गुप्ता, मुख्यमंत्री के मीडिया कॉर्डिनेटर जगमोहन आनंद, हरियाणा कला परिषद के निदेशक संजय भसीन, भाजपा के जिलाध्यक्ष योगेंद्र राणा, मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि संजय बठला ने की शिरकत की।

इस प्रशिक्षण शिविर में करनाल, फरीदाबाद, गुरुग्राम, हिसार और रोहतक जिले की नियमित व सूचीबद्ध पार्टियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दी और उनकी प्रस्तुतियों में किस तरह सुधार किया जा सकता है, इस संबंध में सुझाव दिए गए। मुख्यमंत्री के ओएसडी गजेंद्र फौगाट व हरियाणा कला परिषद के निदेशक संजय भसीन ने कलाकारों को प्रस्तुतियों के संबंध में अलग-अलग टिप्स दिए और किस तरह से इसे और बेहतर बनाया जा सकता है, उसके गुण सिखाए।

प्रशिक्षण शिविर से निखरेंगे कलाकार: मेयर

करनाल की मेयर रेणुबाला गुप्ता ने कहा कि कलाकारों के लिए इस तरह के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करना सरकार व लोक संपर्क विभाग की अच्छी पहल है। हरियाणा सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य लोक संपर्क की इन भजन पार्टियों द्वारा किया जाता है। इस प्रशिक्षण शिविर से अवश्य ही यह कलाकार ओर निखरेंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के नेतृत्व में हरियाणा सरकार निरंतर विकास कार्य कर रही है। आज बिना पर्ची-बिना खर्ची नौकरियों की बात हो या बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रमों की, हरियाणा सरकार हर मोर्चे पर सफल हुई है। भविष्य में भी हरियाणा इसी तरह प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहे, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने इस प्रशिक्षण शिविर के सफल आयोजन पर सूचना, लोक संपर्क, भाषा और संस्कृति विभाग की पूरी टीम को बधाई दी।

अच्छी प्रस्तुति के लिए रियाज और प्रैक्टिस बहुत जरुरी : संजय भसीन

हरियाणा कला परिषद के निदेशक संजय भसीन ने कहा कि अच्छा गाने, अच्छा बजाने, अच्छा नाचने के लिए रियाज और प्रैक्टिस की बहुत जरुरत है। हम चाहे जितने बड़े कलाकार हों लेकिन हम यदि रियाज या प्रक्टिस नहीं करेंगे तो अपनी बेहतरीन प्रस्तुति नहीं दे पाएंगे। उन्होंने कहा कि कलाकार जब भी कहीं प्रस्तुति देने जाएं सबसे पहले रियाज करें। उन्होंने कहा कि हमारे बीच बैठे कलाकार हरियाणा की कला के अधार हैं। हरियाणा सरकार ने हमें मंच दिया है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में निरंतर विकास कार्य हो रहे हैं। इन विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाना हमारा दायित्व है।

भजन पार्टियां कर रही सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य: जगमोहन आनंद

मुख्यमंत्री के मीडिया कॉर्डिनेटर जगमोहन आनंद ने कहा कि हरियाणा के लोक संपर्क विभाग की भजन पार्टियां सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही हैं। गीत और संगीत ऐसी भाषा है जो हर आमजन को समझ आती है, भजन पार्टियां इन्हीं के माध्यम से लोगों तक संदेश पहुंचाती हैं। उन्होंने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री प्रत्येक विधानसभा का दौरा कर रहे हैं, जहां उन्हें अपार स्नेह मिल रहा है। मुख्यमंत्री हरियाणा-एक, हरियाणवी-एक के नारे से आगे बढ़ रहे हैं। मुख्यमंत्री मनोहर लाल की सोच और उनके सपनों को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भजन पार्टियों पर भी है। ऐसे में सरकार की योजनाओं की सहीं से जानकारी लेकर आम लोगों के बीच जाएं। उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम अति आवश्यक है, इससे हम बहुत कुछ सीखते हैं।

करनाल में ताबड़ तोड़ हुई बीएसपी की रैली

आकाश आनंद ने भाजपा–कांग्रेस पर साधा निशाना

बोले– बहुजन समाज मुख्यमंत्री के साथ प्रधानमंत्री बनने की रखता है ताकत

गजब हरियाणा न्यूज /जरनैल रंगा

करनाल । जिला के सेक्टर 12 हुड्डा ग्राउंड में बुधवार को बहुजन समाज पार्टी की और से प्रदेश स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें पार्टी के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर आकाश आनंद ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इस दौरान उन्होंने अपने संबोधन में भाजपा और कांग्रेस पार्टी पर जमकर निशाना साध साधते हुए कहा कि जिस बहुजन समाज का अभीतक शोषण किया गया है। बहुजन समाज मुख्यमंत्री ही नहीं, प्रधानमंत्री बनने की भी ताकत रखता है। उन्होंने कहा कि भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने ऐसी लोकतंत्र की व्यवस्था की थी कि जहां स्कूलों में बच्चों के बीच भेदभाव नहीं होता हो। ऐसे विचारों का भारत बाबा साहब बनाना चाहते थे, जहां महिलाओं पर अत्याचार न होता हो, जहां आपका प्रमोशन जाति देखकर नहीं काबिलियत देखकर मिले, जहां पर हर जाति धर्म को बराबर का सम्मान मिले।

उन्होंने केंद्र व प्रदेश की भाजपा सरकारों पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि वर्तमान में भाजपा सरकार न केवल युवा, बुजुर्ग, महिला विरोधी है। भाजपा सरकार दलित पिछड़ा,आदिवासी, अल्पसंख्यक समाज विरोधी भी है। भाजपा सरकार ने चुनावों में कई वादे किए।

एससी –बीसी की 14 हजार से ज्यादा आरक्षित सीटें खाली हैं।

उन्होंने मुख्यमंत्री मनोहर लाल से पूछा कि एससी –बीसी की आरक्षित सीट भरने का, 25 लाख नौकरियां देने के सभी वादों का क्या हुआ, क्या सभी वादें झूठे थे। उन्होंने कहा कि पांच साल बाद अब सीएम ऐलान कर रहे हैं कि 50 हजार नौकरियां दी जाएंगी तो 25 लाख नौकरियों का क्या हुआ। तीसरा वादा किसानों की आमदनी दोगुनी करने का भी झूठा है।

2017–18 में 8 हजार महीना आमदनी थी, अब पांच साल बाद 10 हजार है। दोगुनी आय करने का वादा कहां गया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री का झूठ किसी से छिपा नहीं है।

बहुजन समाज का अभी तक किया शोषण

आकाश आनंद ने कहा कि बहुजन समाज मुख्यमंत्री के साथ प्रधानमंत्री बनाने की ताकत रखता है। उसका अभी तक शोषण किया है। ये अकेले हरियाणा का नहीं, बल्कि हर उस प्रदेश का हाल है, जहां मनुवादी सरकार सोच रखने वाली सरकारें चल रही हैं। यही फितरत कांग्रेस सरकार की भी रही है। धोखा देना, कमजोरों पर अत्याचार करना ओर बहुजन समाज को दबाकर रखना। इसी तरह केंद्र की भाजपा सरकार ने 10 करोड़ रोजगार देने के वादे किए थे, महंगाई कम करने, गरीबी मिटाने जैसे वादे किए थे। लेकिन गरीब ही खत्म हो रहे हैं। भाजपा सरकार एक ही वादा करती है वो है तोड़ने का।

नहीं चाहिए मुफ्त का राशन

उन्होंने कहा कि गरीब, दलित आदिवासी, पिछड़ा वर्ग व अन्य धार्मिक अल्पसंख्यक समाज को मुफ्त का राशन नहीं चाहिए, बल्कि हमें सिर्फ निष्पक्ष चुनाव चाहिए। क्योंकि बाबा साहब के बच्चे हैं, आपका और अपना हक मांगते नहीं छीनना जानते हैं। यही बहुजन समाज है, जिसने अपनी शेरनी बेटी बहन मायावती को चार–चार बार यूपी का शासक बनाकर बिठाया है।

हम लेने वालों में से नहीं देने वालों में से हैं

जिन्होंने भारत को संविधान दिया है, हम देने वालों में से हैं लेने वालों से नहीं। भाजपा और कांग्रेस दोनों को एक मन की बात नहीं सुनाएंगे, बल्कि काम की बात सुनाएंगे। बहन जी ने कानून व्यवस्था के साथ साथ सामाजिक व्यवस्था के लिए काम किए। सरकारी कॉलेजों में अन्य पिछड़े वर्गों के बच्चों के लिए 27 प्रतिशत की व्यवस्था की।

हरियाणा के पूर्व राज्यपाल बाबू परमानंद को भुलाया नही जा सकता : कटारिया

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

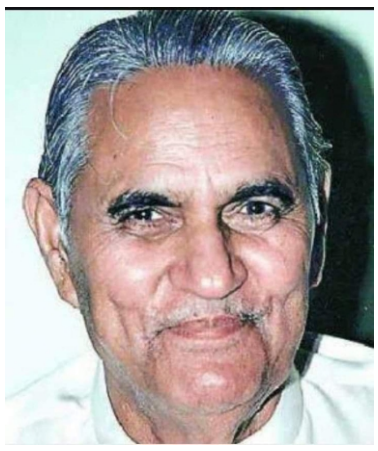

कुरुक्षेत्र । भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के पूर्व अखिल भारतीय उपाध्यक्ष एवं केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सदस्य सूरजभान कटारिया ने कहा कि महान व्यक्तित्व के धनी हरियाणा के पूर्व राज्यपाल बाबू परमानंद को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने दलितों के राजनीतिक, सामाजिक एकीकरण तथा उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किए है, जिन्हें कभी सामाजिक राजनीतिक जीवन में भुला नही सकते है। वह जून 1999 से जुलाई 2004 तक हरियाणा के राज्यपाल रहे थे। कटारिया ने बाबू परमानंद जी को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा कि वह रविदासी समाज के कोहिनूर नेता थे, मुझे उनके साथ सामाजिक सलाहकार के रूप में कार्य करने अवसर मिला है। उनका जन्म जम्मू–कश्मीर राज्य के वर्तमान सांबा जिले के सरोरे गाँव में हुआ था 1962 में वह पहली बार रामगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से जम्मू और कश्मीर विधानसभा के लिए चुने गए वह 1980 में जम्मू और कश्मीर विधानसभा के स्पीकर थे।

युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए शिक्षण संस्थानों में करवाई जाएगी क्वीज प्रतियोगिता

जिला शिक्षा अधिकारी व सिविल सर्जन को दिया जिम्मा : डीसी

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर । उपायुक्त राहुल हुड्डा ने जिला खेल अधिकारी को निर्देश दिए कि जिले के जिस क्षेत्र में नशा करने के आदी ज्यादा है, उस क्षेत्र में खेलों के कार्यक्रम आयोजित करवाए जाए ताकि लोगों के मन की सोच को बदला जा सकें।

उपायुक्त जिला सचिवालय के सभागार में जिला टास्क फोर्स की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस बैठक में उपायुक्त ने कहा कि जिले में नशे पर अंकुश लगाने के लिए सभी को एकजुट होकर काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जिन पांच स्थानों को चिन्हित किया गया था, उनमें अभी तक करीब 900 लोगों को नशें की लत में पाया गया है। इन 900 लोगों के नशे की आदत छुड़वाने के लिए प्रेरित करना है। इसके लिए सम्बंधित विभाग विशेष अभियान चलाए। गांव–गांव जाकर नशे की हानियों के बारे में बताए, जो व्यक्ति नशा छोडना चाहता है उसे नशा मुक्ति केन्द्र में भेजे ताकि उसका ईलाज करवा कर उस व्यक्ति को दुबारा समाज की मुख्य धारा में लाया जा सकें।

उपायुक्त ने सिविल सर्जन को निर्देश दिए कि वह ऐसे लोगों का प्राथमिकता से उपचार करवाने का प्रबंध करें जो व्यक्ति स्वयं नशा छोडना चाहता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिलें में नशा मुक्ति अभियान को सफल बनाने के लिए काम करे। हमारा लक्ष्य जिलें को समय रहते ड्रग्स मुक्त बनाना है इसके लिए शिक्षण संस्थानों, ग्राम पंचायतों व सार्वजनिक स्थानों पर नशे से होने वाले नुकसान के बारे में जागरूक किया जाए।

पुलिस अधीक्षक मोहित हाण्डा ने कहा कि जिलें में नशे के खिलाफ पुलिस द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने डीएसपी को निर्देश दिए कि वह इनकी जांच गम्भीरता से करें।

इस अवसर पर एसडीएम बिलासपुर जसपाल सिंह गिल, जिला न्यायवादी धर्मचंद, सिविल सर्जन डॉ. मनजीत सिंह, जिला खेल अधिकारी राजेन्द्र पाल गुप्ता, जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. विनोद पुण्डिर, डीएसपी राजीव कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

अवैध कालोनियों में सुविधाएं उपलब्ध करने के लिए सरकार ने दिया 14 जुलाई तक का मौका

आवेदन कर्ता डीटीपी कार्यालय में करें आवेदन : डीसी

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर । उपायुक्त राहुल हुड्डा ने बताया कि ग्राम एवं नगर आयोजना विभाग ने निकाय सीमा से बाहर नियंत्रित क्षेत्र व शहरी क्षेत्र में विकसित की गई अवैध कालोनियों को आवश्यक सेवा और नागरिक सुविधाएं प्रदान करने की प्रक्रिया शुरू की थी। विभाग ने सरकार की अधिसूचना 19 जुलाई 2022 के अनुसार निकाय सीमा से बाहर नियंत्रित क्षेत्र व शहरी क्षेत्र में विकसित की गई अवैध कालोनियों को वैध करने के लिए 6 महीने अर्थात 19 जनवरी 2023 तक आवेदन मांगे गए थे। यह आवेदन कालोनाइजर, पंजीकृत रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) व को–ओपरेटिव सोसाइटी कर सकते थे। अब सरकार ने जनहित को मद्देनजर रखते इस पोलिसी को अगले 6 महीने के लिए बढ़ा दिया गया है।

उन्होंने बताया कि समस्त कालोनाइजर, पंजीकृत रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) व को–ओपरेटिव सोसाइटी 14 जुलाई 2023 तक अवैध कालोनियो को नियमित करवाने के लिए वांछित दस्तावेजो सहित आवेदन जिला नगर योजनाकार, कार्यालय स्थित हरियाणा शहरी विकास परिसर यमुनानगर, सैक्टर 21, जगाधरी में कर सकते है। निर्धारित समय के बाद कोई आवेदन स्वीकार नही किया जाएगा।

आवेदन करने का तरीका

डीटीपी देशराज पचीसिया ने बताया कि मलकियत से संबंधित सभी राजस्व दस्तावेज जिसमें जमाबन्दी, रजिस्ट्री, पंजीकृत इकरारनामा व शजरा, मालिकाना सबूत के साथ भूखण्ड धारक की सूची, कालोनी का ले–आउटप्लान (खसरा नंबरान के साथ), सर्वेक्षण प्लान (खसरा/किला नंबर के साथ) पर कालोनी मे मौजूद सभी गलियों की चौडाई व लंबाई और अन्य जन सुविधाओं का विवरण सहित दर्शाना होगा। इसके अलावा यह सर्वेक्षण प्लान गूगल ईमेजरी पर बना होना चाहिए।

उन्होंने बताया कि सभी दस्तावेजों की तीन–तीन प्रतियां व एक साफ्ट कापी जिला नगर योजनाकार, कार्यालय स्थित हरियाणा शहरी विकास परिसर यमुनानगर, सैक्टर 21, जगाधरी में जमा करवानी होगी। इसके अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति का किसी भी प्रकार की वर्तमान पालिसी/पूर्व में प्रकाशित पालिसी से सम्बन्धित जानकारी के लिए इच्छुक आगन्तुक जिला नगर योजनाकार, यमुनानगर–जगाधरी से सम्पर्क कर सकते है।

गांव डेरा पुरबिया के लोग मूलभूत सुविधा न होने से परेशान

हल्के की जनता ने विधायक बनाया तो किसी भी गांव में नहीं रहेगी मूलभूत सुविधाओं की कमी : संदीप गर्ग

गजब हरियाणा न्यूज/रविंद्र

पिपली। खंड के गांव डेरा पुरबिया में शुक्रवार को ग्रामीणों ने स्टालवार्ट फाउंडेशन के चेयरमैन एवं समाजसेवी संदीप गर्ग का जोरदार स्वागत किया गया। गांव डेरा पुरबिया में मूलभूत सुविधा न होने से ग्रामीण परेशान है। जिसको लेकर ग्रामीणों ने समाजसेवी संदीप गर्ग के समक्ष गांव की समस्याएं रखी।

गांव के सरपंच राजेश कुमार, पंच महेश, पंच राकेश, राजेन्द्र कल्याण, मोहित, प्रवेश, संजीव कुमार, रणजीत आदि ने कहा कि इस बार डेरा पुरबिया को अलग पंचायत बना तो दिया गया है। परंतु पंचायत मूलभूत सुविधाओं से पिछड़ रही है। जिसके कारण गांव के लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि गांव में पानी की निकासी नहीं है, सरकारी स्कूल सिरसमा पंचायत में है बच्चे धूप में वहां तक जाते हैं और भी अनेक समस्याएं गांव में है। वहीं समाजसेवी संदीप गर्ग ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी ओर से जो भी संभव प्रयास होगा वह गांव की भलाई के लिए किया जाएगा और उनके निजी कोष में जितने भी मदद गांव के लोगों के लिए की जा सकती होगी उसमें की जाएगी। उन्होंने कहा कि लाडवा हल्का उनका अपना परिवार है और वह हल्के के प्रत्येक व्यक्ति के लिए दिन–रात कार्य कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि यदि 2024 के चुनाव में हल्के की जनता ने उन्हें आशीर्वाद दिया तो वह लाडवा हल्के को पूरे प्रदेश भर में सबसे अलग और विकासशील विधानसभा बनाने का प्रयास करेंगे। मौके पर भारी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

‘गजब हरियाणा’ में अपने कारोबार का विज्ञापन प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें :
91382-03233

हरियाणा राज्य सब जूनियर हॉकी में द्वितीय स्थान हासिल करने पर डीएवी स्कूल की प्रिंसीपल ने खिलाडियों को किया सम्मानित

हिसार में 15 से 20 अप्रैल तक हॉकी हरियाणा की तरफ से आयोजित की गई सब जूनियर पुरुष हॉकी राज्य स्तरीय चैम्पियनशिप

डीएवी स्कूल के खिलाडी अमितोज सिंह रहे कुरुक्षेत्र टीम के सदस्य

गजब हरियाणा न्यूज /जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, डीएवी स्कूल की प्रिंसीपल गीतिका जसूजा ने कहा कि डीएवी स्कूल के विद्यार्थी खेलों के क्षेत्र में सराहनीय प्रदर्शन करके कुरुक्षेत्र के साथ-साथ हरियाणा प्रदेश का नाम रोशन कर रहे है। अब डीएवी स्कूल 10वीं कक्षा के विद्यार्थी अमितोज सिंह ने कुरुक्षेत्र की सब जूनियर हॉकी टीम की तरफ से खेला और कुरुक्षेत्र की टीम में राज्य स्तरीय कुरुक्षेत्र की टीम में दूसरा स्थान हासिल करके स्कूल का नाम रोशन किया है।

प्रिंसीपल गीतिका जसूजा बुधवार को स्कूल में आयोजित एक सम्मान समारोह में बोल रही थी। इससे पहले स्कूल की प्रिंसीपल गीतिका जूसजा,डीपीआई राजेश सहारण, पीटीआई विरेन्द्र सिंह ने 10वीं कक्षा के विद्यार्थी और कुरुक्षेत्र सब जूनियर हॉकी टीम के सदस्य अमितोज सिंह को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी बढ़चढ़ कर भाग लेना चाहिए। इस स्कूल के विद्यार्थी समय-समय पर हर प्रकार के खेलों की प्रतियोगिताओं में भाग लेते है। इस स्कूल के खिलाडी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी खेलों में भाग लेकर देश व प्रदेश का नाम रोशन कर रहे है। इन खिलाडियों को स्कूल की तरफ से हर प्रकार की सुविधाएं मुहैया करवाने के साथ-साथ समय-समय पर प्रोत्साहित भी किया जाता है।

स्कूल के पीटीआई विरेन्द्र सिंह ने कहा कि हॉकी हरियाणा की तरफ से 15 से 20 अप्रैल को हिसार में सब जूनियर राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रदेश भर से 22 जिलों की टीम ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कुरुक्षेत्र की टीम ने सेमिफाइनल में सोनीपत की टीम को 1-0 से हराया और फाइनल में जींद से 3-2 से हार मिली। इस कुरुक्षेत्र की टीम में डीएवी स्कूल के 10वीं कक्षा के विद्यार्थी अमितोज ने भी एक सदस्य के रूप में भाग लिया। इस जीत पर हॉकी हरियाणा के चीफ चयनकर्ता गुरविन्द्र सिंह, हॉकी प्रशिक्षक विरेन्द्र सिंह, सोहन लाल, हॉकी प्रशिक्षक नरेन्द्र ठाकुर ने भी बधाई और शुभकामनाएं दी है।

दवाईयों से बेअसर, लडखड़ाते-कांपते बुजुर्ग चलने फिरने में हुए समर्थ

दिमाग को रिमोट से कंट्रोल कर लडखड़ाते कांपते बुजुर्ग को दिया जा सकता है नया जीवन

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, बुढ़ापे में कंपन, चलने-फिरने में असमर्थ, हाथ-बाजू व सिर का कांपना, बोलने में कठिनाई व अंगों की जकडऩ जैसे लक्ष्णों से ग्रस्त बुजुर्ग जो लंबे समय से बिस्तर पर पड़े रहने को मजबूर हों, ऐसे पार्किंसंस बीमारी से पीड़ित बुजुर्ग मरीजों को पूरी तरह से स्वस्थ किया जा सकता है। यह बात जाने-माने न्यूरो सर्जन डा. अनुपम जिंदल ने कुरुक्षेत्र में आयोजित एक पत्रकारवार्ता को संबोधित करते हुए कही, जो कि उपरोक्त लक्ष्णों से ग्रस्त ऐसे पार्किंसंस के मरीजों की पहचान के लिए मोहाली के फोर्टिस अस्पताल में हर शनिवार आयोजित की जाती 'मूवमेंट डिसआर्डर क्लिनिक' संबंधी अवगत करवाने के लिए शहर में पहुंचे थे।

फोर्टिस अस्पताल में न्यूरो सर्जरी विभाग के एडिशनल डायरेक्टर डा. अनुपम जिंदल ने कहा कि चिकित्सा जगत में आई क्रांति से ऐसे बुजुर्ग जो पार्किंसंस रोग के कारण स्वयं व अपने घरवालों पर एक भार की तरह बन जाते हैं, बुजुर्गों की इन समस्याओं को उनके मस्तिष्क में डीप ब्रेन सिटमुलेशन (डीबीएस) तकनीक से पूरी तरह कंट्रोल (यानि पूरी तरह से स्वस्थ) किया जा सकता है।

डा. अनुपम जिंदल ने पिछले 5 वर्षों से पार्किंसंस रोग से पीड़ित एक 64 वर्षीय बुजुर्ग मरीज के उपचार में प्रयोग की गई डीप ब्रेन स्टिमुलेशन तकनीक संबंधी अवगत करवाते हुए बताया कि रोगी के दिमाग को इलेक्ट्रिकल तंत्र से चलाने के लिए एक इलेक्ट्रोड (वायर/स्विचर की तरह दिखने वाली इलेक्ट्रिकल वस्तु) को संबंधित मरीज के मस्तिष्क में डाला जाता है, जिससे उसके मस्तिष्क में प्रभावित कोशिकाओं व कैमिकल्स का उपचार डाक्टर द्वारा रिमोट से किया जाता है। हरियाणा के एक अन्य 65 वर्षीय बुजुर्ग की डीबीएस से हुई सर्जरी संबंधी डा. जिंदल ने बताया कि मरीज आठ वर्षों से पार्किंसंस रोग के कारण अपने पैरों को घसीटकर चलने में मजबूर था। डा. जिंदल ने बताया कि उपरोक्त मरीजों पर दवाएं बेअसर होने के कारण समस्या बढ़ रही थी, जिसने उनके स्वास्थ्य व दैनिक जीवन पर गंभीर प्रभाव डाल दिया था। ऐसे में डीप ब्रेन स्टिमुलेशन तकनीक से उनका इलाज संभव हो पाया। उन्होंने बताया कि अच्छी देखभाल के बाद उक्त मरीज की सेहत में सुधार हुआ और लक्षण कम होने लगे। धीरे-धीरे उनकी जिंदगी पटरी पर लौट आई और आज वह सामान्य जीवन जी रहे हैं।

डॉ. अनुपम जिंदल ने बताया कि डीबीएस ने पार्किंसंस रोग से पीड़ित रोगियों के उपचार में क्रांति ला दी है। डीप ब्रेन स्टिमुलेशन पार्किंसंस रोग के रोगियों में बड़ी जटिलताओं में सुधार करता है। हाथ, बाजू, सिर का कांपना और चलने में कठिनाई जैसे लक्षण सर्जरी के बाद कम हो जाते हैं।

उन्होंने बताया कि मूवमेंट डिसऑर्डर क्लिनिक हर शनिवार मोहाली स्थित फोर्टिस अस्पताल में सुबह 11 से 2 बजे तक चलती है, जहां उनके अलावा न्यूरो मॉडयूलेशन टीम में शामिल न्यूरोलॉजी कंस्लटेंट डा. निशित सावल, न्यूरो इंटरवेंशन व इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी कंस्लटेंट डा. विवेक अग्रवाल, न्यूरो रेडयोलॉजी कंस्लटेंट डा. अभिषेक मिलकर ऐसे मरीजों की पहचान कर उन्हें सही इलाज करवाने की सलाह देते हैं। उन्होंने बताया कि अस्पताल में फूड एंड ड्रग डिपार्टमेंट से मंजूरशुदा वैगल नर्व स्टिमुलेशन (वीएनएस) से मिर्गी व डिप्रेशन के मरीजों का इलाज किया जाता है।

घरौंडा की अवैध कालौनी में की तोडफोड की कार्यवाही : गुंजन

गजब हरियाणा न्यूज/अमित बंसल

घरौंडा/करनाल । जिला नगर योजनाकार गुंजन ने बताया कि घरौंडा में एक अवैध कालौनी व दो अवैध ढाबों के विरूद्ध तोडफोड की कार्यवाही को अंजाम दिया। तोडफोड कार्यावाही डयूटी मैजिस्ट्रेट व पुलिस की अगुवाई में की गई। उन्होंने बताया कि पहली अवैध कालौनी कोहण्ड गांव में जी.टी. रोड के साथ स्थित है। जिसका एरिया लगभग एक एकड़ है। इस कालोनी में एक डीलर का दफतर एवं सभी डी0पी0सी0 को तोड़ा दिया गया है।

पहला अवैध ढाबा (दाना पानी ढाबा) जी.टी. रोड पर गांव गढ़ी मुलतान में स्थित था को धवस्त कर दिया गया है।

दूसरा अवैध ढाबा (चढ़ती कलां ढाबा) भी जी.टी. रोड़ पर गांव गढ़ी मुलतान में स्थित था को धवस्त कर दिया गया है।

कार्यवाही के दौरान जिला नगर योजनाकार, करनाल मौके पर खुद उपस्थित रही इसके अतिरिक्त जिला नगर योजनकार, करनाल ने लोगों से अपील की कि कोई भी व्यक्ति अवैध कालोनी में कोई निर्माण नहीं करें अन्यथा कार्यालय द्वारा तोडफोड की कार्यवाही की मध्यनजर रखते हुए अवैध निर्माणों के विरूद्ध कोई कोताही नहीं

बरती जाएगी।

इसके अतिरिक्त डयूटी मैजिस्ट्रेट व थाना घरौंडा की पुलिस फोर्स मौके पर उपस्थित रही। जिला नगर योजनाकार, करनाल की लगातार तोडफोड से यह बिल्कुल साफ हो गया है कि करनाल जिले में अवैध कालौनियों के विरूद्ध किसी प्रकार की कोताही नहीं बरती जाएगी व तोडफोड की कार्यवाही जारी रहेगी।

बीपीएल परिवारों को मकान मरम्मत के लिए मिलते हैं 80 हजार : अनीश यादव

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल । आजादी अमृत काल में अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा सभी बीपीएल परिवारों को डॉ. बीआर अम्बेडकर आवास नवीनीकरण योजना के तहत मकान मरम्मत के लिए 80 हजार रुपए की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है, जिसका पात्र बीपीएल परिवारों को लाभ उठाना चाहिए।

उपायुक्त अनीश यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि इससे पहले केवल अनुसूचित जाति के बीपीएल परिवारों को ही इस योजना का लाभ दिया जा रहा था। वर्तमान प्रदेश सरकार ने योजना में बदलाव करते हुए इसमें सभी बीपीएल परिवारों को शामिल करने का सराहनीय निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि सरकार ने लाभार्थियों का दायरा बढ़ाने के साथ-साथ योजना के तहत मिलने वाली राशि को भी 50 हजार रुपए से बढ़ाकर 80 हजार रुपए किया है। हरियाणा सरकार की यह आवास नवीनीकरण योजना अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग से संबंधित है तथा बीपीएल सूची में शामिल आवेदकों को इस योजना के लिए पात्र बनाया गया है। उन्होंने योजना से जुड़ी जरूरी जानकारी देते हुए बताया कि मकान को बनाए हुए 10 साल या इससे अधिक समय हो गया हो तथा मकान मरम्मत के योग्य हो तभी पात्र परिवार को इस योजना का लाभ दिया जाएगा।

उपायुक्त ने पात्रता संबंधी जानकारी देते हुए बताया कि आवेदनकर्ता हरियाणा का स्थाई निवासी होना चाहिए तथा आवेदनकर्ता का नाम बीपीएल सूची में दर्ज होना चाहिए। आवेदनकर्ता को अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग से संबंधित है तथा बीपीएल सूची में शामिल आवेदकों को बीपीएल परिवार होने का

अपना जाति प्रमाण पत्र दिखाना अनिवार्य है। आवेदनकर्ता का अपना घर होना चाहिए। घर कम से कम 10 साल पुराना होना चाहिए। उन्होंने बताया कि प्रार्थी की परिवार आईडी, बीपीएल राशन कार्ड नंबर, राशन पत्रिका, एससी, बीसी जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बैंक खाता संख्या, मोबाइल नंबर, घर के साथ फोटो, बिजली बिल-हाउस रजिस्ट्री-पानी बिल में से कोई भी दो, मकान की मरम्मत पर अनुमानित खर्च का प्रमाण जैसे कागजात जरूरी है।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा ढिंगरा प्रिंटिंग प्रैस, अग्रसैन चौंक, मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं0 890 पी, सैक्टर-4, अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (91382-03233) Registration Namber : HAR/HIN/2018/77311